मासिक पाठ्यक्रम

पाठ्य पुस्तकें
स्पर्श भाग १
संचयन भाग १
व्याकरण दर्शिका

अप्रैल–मई	स्पर्श	–	दुख का अधिकार
			रहीम के दोहे
	संचयन	–	गिल्लू
	व्याकरण	–	वर्ण–विचार
जुलाई	स्पर्श	–	धूल
			रैदास के पद
	संचयन	–	स्मृति
	व्याकरण	–	उपसर्ग–प्रत्यय, मुहावरे
अगस्त	स्पर्श	–	एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा
			आदमीनामा
			तुम कब जाओगे अतिथि
	संचयन	–	कल्लू कुम्हार की उनाकोटि
	व्याकरण	–	संधि, विराम–चिह्न,
अक्तूबर	स्पर्श	–	धर्म की आड़
			एक फूल की चाह
	व्याकरण	–	शब्द और पद
नवंबर	स्पर्श	–	वैज्ञानिक चेतना के वाहक
			अग्निपथ
	संचयन	–	हामिद खाँ
	व्याकरण	–	समास
दिसंबर	स्पर्श	–	कीचड़ का काव्य
			गीत–अगीत
	संचयन	–	मेरा छोटा सा निजी पुस्तकालय
	व्याकरण	–	वाक्य
जनवरी	स्पर्श	–	नए इलाके में
			खुशबू रचते हैं हाथ
	संचयन	–	दिए जल उठे
	व्याकरण	–	अशुद्धि–शोधन
फरवरी	स्पर्श	–	शुक्रतारे के समान

अपठित बोध, अनुच्छेद–लेखन, पत्र–लेखन, संवाद–लेखन, चित्र–लेखन, विज्ञापन तथा सूचना–लेखन क्रमशः प्रत्येक माह करवाए जाएँगे।

अपठित बोध

प्रश्न निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिएः-

I 'साँच बराबर तप नहीं' सूक्ति में सत्य की महत्ता को स्वीकारा गया है। सच के मार्ग पर चलना अपने-आप में तप है। तप का अर्थ है 'तपना'। सच का मार्ग सदैव कंटीला होता है, कठिन होता है। तप करने की ताकत रखने वाला ही इस पर चल सकता है। तप वही कर सकता है जिसका हृदय साफ़, निष्पाप व एकाग्रचित्त हो। 'सत्य' मानव हृदय के गौरव का प्रतीक है। सच बोलने वाले के मुख पर अलग तरह का तेज रहता है। ऐसा व्यक्ति निडर होता है व लोगों के दिल में जगह बनाता है। अप्रिय सत्य मनुष्य को कभी नहीं बोलना चाहिए। सत्य-असत्य की परिभाषा अपने-आप में कुछ नहीं, परंतु दूसरों की भलाई, कल्याण के लिए बोला गया बड़े-से-बड़ा झूठ भी सत्य है और वास्तविक सत्य जो दूसरों को कठिनाई में डाल दे, बोला जाए तो वह झूठ की परिधि में आता है। सत्य का पालन करने के लिए सत्यवादी हरिशचंद्र अपने पूरे जीवन को तपस्वी की तरह जीने पर मजबूर हुए। तप और सत्य मिलकर मानव जीवन को विकास की राह पर अग्रसर करते हैं। सत्य की प्राप्ति ही कठोरतम तप है। यह संसार का सर्वोत्तम धर्म है जिसके बिना जीवन सारहीन हो जाता है। सत्य अटल है। लाख झूठ भी उसके समक्ष टिक नहीं सकते। झूठ बुलबले की भाँति है जिसका अस्तित्व क्षणिक है। सच स्थायी है, चिरंतन है। एक सच को छुपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं और अंत में सौ झूठों का आवरण भेदकर सत्य बाहर निकल ही आता है। सत्य से व्यक्ति जितना मुँह मोड़ता है वह उतना पल-पल में सामने आता है। कठिन अवश्य है तप का मार्ग, सत्य का मार्ग, परंतु कल्याणकारी है।

क. 'सच' का मार्ग कैसा होता है?

ख. तप कैसा व्यक्ति कर सकता है?

ग. सच बोलने वाले की क्या पहचान है?

घ. मानव जीवन के विकास की राह को कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है?

ङ. 'सच' और 'झूठ' में क्या अंतर है?

च. 'झूठ बुलबले की भाँति है' – का आशय स्पष्ट कीजिए।

छ. विलोम शब्द लिखिएः–

i. क्षणिक –

ii. भलाई –

iii. निडर –

iv. वास्तविक –

ज. दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए –

i. कठिन –

ii. समक्ष –

iii. हृदय –

झ. 'मुँह मोड़ना' का इस प्रकार वाक्य-प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए।

ञ. उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिएः-

i. असत्य –

ii. अप्रिय –

II एक बार स्वामी विवेकानंद का एक शिष्य उनके पास आया और उसने कहा, ''स्वामी जी, मैं आप की तरह भारत की संस्कृति, दर्शन और रीति-रिवाज़ का प्रचार-प्रसार करने के लिए अमेरिका जाना चाहता हूँ। यह मेरी पहली यात्रा है। आप मुझे विदेश जाने की अनुमति और अपना आशीर्वाद दें ताकि मैं अपने मकसद में सफल होऊँ।'' स्वामी जी ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, फिर कहा, ''सोचकर बताऊँगा।'' शिष्य हैरत में पड़ गया। उसने विवकानंद जी से इस उत्तर की कल्पना भी नहीं की थी। उसने फिर कहा, ''स्वामी जी, मैं आपकी तरह सादगी से अपने देश की संस्कृति का प्रचार करूँगा। मेरा ध्यान और किसी चीज़ पर नहीं जाएगा।'' विवेकानंद ने फिर कहा, ''सोचकर बताऊँगा।'' शिष्य ने समझ लिया कि स्वामी जी उसे विदेश नहीं भेजना चाहते इसलिए ऐसा कह रहे हैं। वह उनके पास ही रुक गया। दो दिनों के बाद स्वामी जी ने उसे बुलाया और कहा, ''तुम अमेरिका जाना चाहते हो तो जाओ। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।'' शिष्य ने सोचा कि स्वामी जी ने इतनी छोटी-सी बात के लिए दो दिन सोचने में क्यों लगा दिए? उसने अपनी यह दुविधा स्वामी जी को बताई। स्वामी जी ने कहा, ''मैं दो दिनों में यह समझना चाहता था कि तुम्हारे अंदर कितनी सहनशक्ति है। कहीं तुम्हारा आत्म-विश्वास डगमगा तो नहीं रहा है। लेकिन तुम दो दिनों तक यहाँ रहकर निर्विकार भाव से मेरे आदेश की प्रतीक्षा करते रहे। न क्रोध किया, न जल्दबाज़ी की और न ही धैर्य खोया। जिसमें इतनी सहनशक्ति और गुरु के प्रति प्रेम का भाव होगा, वह शिष्य कभी भटकेगा नहीं। मेरे अधूरे काम को वही आगे बढ़ा सकता है। किसी दूसरे देश के नागरिक के मन में अपने देश की संस्कृति को अंदर तक पहुँचाने के लिए ज्ञान के साथ-साथ धैर्य, विवेक और संयम की आवश्यकता होती है। मैं इसी बात की परीक्षा ले रहा था।'' शिष्य स्वामी जी की इस अनोखी परीक्षा से अभिभूत हो गया।

क. स्वामी जी के शिष्य का अमेरिका जाने का क्या उद्देश्य था?

ख. विवेकानंद जी ने शिष्य को अमेरिका जाने की अनुमति क्यों नहीं दी?

ग. विवेकानंद जी के उत्तर न देने पर शिष्य की क्या प्रतिक्रिया हुई?

घ. शिष्य स्वामी जी के पास क्यों गया था?

ङ. दो दिन के बाद स्वामी जी ने अपने शिष्य से क्या कहा?

च. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

छ. विलोम शब्द लिखिएः-

i. देश -

ii. गुरु -

iii. धैर्य -

iv. सफल -

III कर्म में आनंद अनुभव करने वालों ही का नाम कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनंद भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फल स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और क्लेश का शमन करते हुए चित्त में जो उल्लास की पुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है। उसके लिए सुख तब तक के लिए रुका नहीं रहता जब तक कि फल प्राप्त न हो जाए, बल्कि उसी समय से थोड़ा-थोड़ा करके मिलने लगता है जब से वह कर्म की ओर हाथ बढ़ाता है।

कभी-कभी आनंद का मूल विषय तो कुछ और रहता है, परंतु उस आनंद के कारण एक ऐसी स्फूर्ति उत्पन्न होती है जो बहुत से कामों की ओर हर्ष के साथ अग्रसर करती है। इसी प्रसन्नता और तत्परता को देख लोग कहते है कि वे काम बड़े उत्साह से कर रहा है। यदि किसी मनुष्य को बहुत-सा लाभ हो जाता है या उसकी कोई बड़ी भारी कामना पूर्ण हो जाती है तो जो काम उसके सामने आते हैं उन सबको वह बड़े हर्ष और तत्परता के साथ करता है। उसके इस हर्ष और तत्परता को भी लोग उत्साह ही कहते हैं। इसी प्रकार किसी उत्तम फल या सुख-प्राप्ति को आशा या निश्चय से उत्पन्न आनंद, फलोन्मुख प्रयत्नों के अतिरिक्त और दूसरे व्यापारों के साथ संलग्न होकर, उत्साह के रूप में दिखाई पड़ता है। यदि हम किसी ऐसे उद्‌योग में लगे हैं जिससे आगे चलकर हमें बहुत लाभ या सुख की आशा है तो हम उस उद्‌योग को तो उत्साह के साथ करते ही हैं, अन्य कार्यों में भी प्रायः अपना उत्साह दिखा देते हैं।

यह बात उत्साह में नहीं, अन्य मनोविकारों में भी बराबर पाई जाती है। यदि हम किसी बात पर क्रुद्‌ध बैठे हैं और इसी बीच में कोई दूसरा आकर हमसे कोई बात सीधी तरह से पूछता है तो भी हम उस पर झुंझला उठते हैं। इस झुंझलाहट का न तो कोई निर्दिष्ट कारण होता है, न उद्‌देश्य। यह केवल क्रोध की स्थिति के व्याघात को रोकने की क्रिया है, क्रोध की रक्षा का प्रयत्न है। इस झुंझलाहट द्‌वारा हम प्रकट करते हैं कि हम क्रोध में हैं और क्रोध में ही रहना चाहते हैं। क्रोध को बनाए रखने के लिए हम उन बातों से भी क्रोध ही संचित करते हैं जिनसे दूसरी अवस्था में हम विपरीत भाव प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार यदि हमारा चित्त किसी विषय में उत्साहित रहता है तो हम अन्य विषयों में भी अपना उत्साह दिखा देते हैं।

क लेखक ने कर्मण्य किसे कहा है?

ख उनके लिए सुख कब तक रुका नहीं रहता?

ग लोग उत्साह किसे कहते हैं?

घ हम किस उद्योग को उत्साह के साथ करते हैं?

ङ झुंझलाहट द्वारा हम क्या प्रकट करते हैं?

6 विलोम लिखिए:-

क आशा -

ख निश्चय -

ग लाभ -

IV दुर्निवार संतान प्रवाह के कारण ही पीपल अश्वत्थ कहा जाता है। श्वत्थ का अर्थ है कल तक रहने वाले, अवश्वत्थ का अर्थ है जो कल की परंपरा के बाहर अक्षय हो। यही कारण है कि हमारी संस्कृति में पीपल जीवन तरु है। वह जीवन-मरण, हर्ष-विवाद, राग-विराग, सबमें बहुत बड़ा आश्वासन है। वह एक ओर मन की चंचलता को पत्तियों के बहाने दिग्दर्शित करता है, वहीं दूसरी ओर अपनी जड़ो के विस्तार के द्वारा आतुर की अनश्वरता भी दिग्दर्शित करता है। एक ओर वह सत्य का भरोसा देता है, यहाँ आकर कोई झूठ नहीं बोलेगा, दूसरी ओर भय देता है। अदृश्य सत्ताएँ भी यहाँ हैं, वे कुछ नहीं, तुम्हारे भीतर के असत्य हैं, जिनका तुम्हें यहाँ आते ही एहसास होने लगता है। एक ओर पीपल पूरा-का-पूरा सामने है, विशाल छायादार वृक्ष, दूसरी ओर वह उतना ही अदृश्य विशाल भीतर दूर तक चला गया है। पीपल यदि गाँव में न हो तो उस गाँव की शोभा घट जाती है। पीपल की छाँह में कितना बड़ा परिवार और उससे भी बड़ा परिवार-भाव पलता है। इसके बावजूद पीपल कितना निस्संग है। कितना अकेला है, कितना विरागी है, कितना उसने देखा है, कितना उसने झेला है। कितनी बार मदमाते हाथियों से अधिक मदमाते उनके पीलवानों ने उनकी डालें छिनगाई हैं, कितनी बार बकरियों के पालने वालों ने उसकी पत्तियों के संसार को बेरहमी से उजाड़ा है, कितने बेदर्द मौसम उसने झेले हैं और वह अनासक्त वैसे ही खड़ा है, कितनी पीढ़ियाँ उसकी आँखों के सामने गुज़री हैं, सबका सुख-दुख, संपत्ति-विपत्ति देखते-देखते वह इतना काठ हो गया है, बस जीवन का सहज छंद वह अपनी पत्तियों की थिरकन के द्वारा पढ़ता रहता है। पढ़ता क्या गुनगुनाता रहता है, जीवन यही है, थोड़ा-सा सुख, ढेर सारा दुख। पर इससे भी ज़्यादा जीने की चाह, अकेले न जी पाएँ, तो साझे की तरह, साझे में धोखा खाए तो भी साझे की तड़पन, हज़ार-हज़ार पक्षियों का कलरव, दुपहरी का सन्नाटा, रात की भयावह शांति, सुबह-शाम की हलचल, एकाएक तरुणाई का प्यार, फिर एकाएक अपने ही पत्तों का छोड़-छोड़कर दूर-दूर भागना, जाड़े का कुहरा, पतझड़ की मार, वसंत का प्यार, निदाघा की स्निग्धता, वर्षा का हर्ष, यही तो जीवन है।

क अश्वत्थ का क्या अर्थ है?

ख पीपल को जीवन-तरु क्यों कहा गया है?

ग अदृश्य सत्ताएँ लेखक ने किसे कहा है?

घ पीपल को लेखक ने निस्संग क्यों कहा है?

ङ पीपल पत्तियों की थिरकन द्वारा क्या पढ़ता और गुनगुनाता रहता है?

च गद्यांश में से किन्हीं तीन विलोम शब्दों के युग्मों को छाँटकर लिखिए।

छ निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग कीजिए:-

i बेदर्द -

ii अदृश्य -

iii अनश्वरता -

V जब व्यक्ति अपने आपको नहीं देख पाता, तब हज़ारों समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। इनका कहीं अंत नहीं आता। गरीबी की समस्या हो या मकान और कपड़े की समस्या हो या अन्य समस्याएँ हों, वे सारी की सारी गौण समस्याएँ हैं, मूल समस्या नहीं है।

ये पत्तों की समस्याएँ हैं, जड़ की नहीं हैं। पत्तों का क्या? पतझड़ आता है, सारे पत्ते झड़ जाते हैं। बसंत आता है और सारे पत्ते आ जाते हैं, वृक्ष हरा-भरा हो जाता है। यह मूल समस्या नहीं है। मूल समस्या है कि व्यक्ति अपने-आपको नहीं देख पा रहा है। उसके पीछे ये पाँच कारण या समस्याएँ काम कर रही हैं। पहली मिथ्या दृष्टिकोण, दूसरी असंयम, तीसरी प्रमाद, चौथी कषाय, पाँचवीं चंचलता।

जैन दर्शन ने बताया कि मूल समस्याएँ ये पाँच हैं। यही वास्तव में दुख है। यही दुख का चक्र है। जब तक इस दुख के चक्र को नहीं तोड़ा जाएगा, तब तक जो सामाजिक, मानसिक और आर्थिक समस्याएँ हैं, उनका सही समाधान नहीं हो पाएगा।

एक प्रश्न है कि आदमी करोड़पति है, अरबपति है। वह अप्रामाणिक और अनैतिक व्यवहार करता है। क्या वह बुराई गरीबी के कारण करता है? अभाव के कारण करता है? रोटी-रोज़ी के लिए करता है?

गरीब आदमी इतना अनैतिक नहीं होता, जितना अनैतिक एक धनी और अमीर आदमी होता है। समस्या धन की नहीं है। समस्या लोभ की है। यह सबसे बड़ी समस्या है। इसका समाधान नहीं खोजा जाता। समाधान खोजा जाता है गरीबी का। वह सभी समाप्त नहीं होती। कुछ लोग बहुत धनी हो जाते हैं और कुछ अत्यधिक गरीब रह जाते हैं। जब पहाड़ है तो गड्ढा भी अवश्य होगा। ऊँचाई है तो निचाई भी होगी। सर्वत्र समतल हो नहीं सकता? यह असंभव नहीं है। पर जब तक मूल समस्या पर ध्यान नहीं जाता, तब तक समस्या का समाधान नहीं मिल सकता।

क कौन-कौन सी गौण समस्याएँ हैं?

ख पतझड़ आने पर क्या होता है?

ग किन पाँच प्रमुख समस्याओं का वर्णन किया गया है?

घ उपरोक्त गद्यांश में अनैतिकता का प्रमुख कारण किसे बताया गया है?

ङ उपरोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक क्या हो सकता है?

च. विलोम लिखिए:-

१ आवश्यक -

२ गौण -

३ बुराई -

४ नैतिक -

VI बातचीत का भी एक विशेष प्रकार का आनंद होता है। जिनको इस आनंद को भोगने की आदत पड़ जाती है वे इसके लिए अपना खाना-पीना तक छोड़ देते हैं, अपना और नुकसान कर लेते हैं, लेकिन बातचीत से प्राप्त आनंद को नहीं खोना चाहते। जिनसे केवल पत्र-व्यवहार है, कभी एक बार भी साक्षात्कार नहीं हुआ, उन्हें अपने प्रेमी से बात करने की अत्यधिक लालसा रहती है। अपने मन के भावों को दूसरों के सम्मुख प्रकट करने की और दूसरों के अभिप्राय को स्वयं ग्रहण करने का एकमात्र साधन शब्द ही है।

बेन जानसन का यह कथन उचित प्रतीत होता है कि ''बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है।'' बातचीत की सीमा दो से लेकर वहाँ तक रखी जा सकती है जितनों की जमात, मीटिंग या सभा न समझ ली जाए। एडिसन का मत है कि असल बातचीत सिर्फ़ दो में ही हो सकती है। जब तीन हुए तब वह दो की बात कोसों दूर चली जाती है। चार से अधिक की बातचीत केवल राम-रमौवल कहलाती है। इसलिए जब दो आदमी परस्पर बैठे बातें कर रहे हों, यदि तीसरा वहाँ आ जाए तो वे दोनों निरस्त बैठ जाते हैं या फिर तीसरे को निपट मूर्ख और अज्ञानी समझ बनाने लगते हैं।

इस बातचीत के अनेक भेद हैं। दो बुड्ढों की बातचीत प्रायः ज़माने की शिकायत पर हुआ करती है। नौजवानों की बातचीत का विषय जोश, उत्साह, नई उमंग, नया हौसला आदि होता है। पढ़े-लिखे लोगों की बातचीत का विषय प्रसिद्ध विद्वान, विचारक और उनके विचार होते हैं। खिलाड़ियों की बातचीत का विषय खेल-चर्चा तथा अधेड़ आयु की स्त्रियों का मुख्य विषय अपनी बहू-बेटी का गिला-शिकवा या पास-पड़ौस की चर्चा होती है। स्कूल के लड़कों की बातचीत का उद्देश्य अपने गुरुजनों की प्रशंसा या निंदा अथवा अपने सहपाठियों के गुण-दोषों आदि का वर्णन करना होता है।

क बातचीत की आदत का क्या असर होता है?

ख अपने मन के भाव दूसरे के सामने प्रकट करने का एकमात्र साधन क्या हो सकता है?

ग असली बातचीत कब हो सकती है?

घ बेन जानसन ने क्या माना है?

ङ उपरोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक क्या हो सकता है?

च. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध कीजिएः–

i महततव –

ii प्रशन्सा –

iii सपर्श –

छ. विलोम शब्द लिखिएः–

i उचित –

ii प्रत्यक्ष –

iii अज्ञानी –

ज. सही स्थान पर अनुस्वार लगाइएः–

i उमगं –

ii आंनद –

iii स्वंय –

VII आज लगता है कि संयुक्त परिवार का विघटन शायद अवश्यंभावी हो गया। आज हमारा समाज बदल गया है, आजीविका के आधार बदल गए हैं, सोच का तरीका बदल गया है। माता-पिता और गुरु के प्रति आदर और श्रद्धा क्यों और कहाँ लुप्त हो गए? आखिर माँ-बाप और संतान का रिश्ता तो वैसा ही है, जैसा शिष्य और आचार्य का संबंध। उत्तरवर्ती पीढ़ी पूर्ववर्ती पीढ़ी को और उनकी सोच को बेकार कहकर अपने से बड़ों का तिरस्कार करे यह अपसंस्कृति का उदाहरण है। जो व्यक्ति अपने माँ-बाप और गुरु को आदर नहीं दे पाता, कल उसे भी आदर नहीं मिलेगा। शादी-ब्याह माँ-बाप की आज्ञा-अनुमति से ही हो, यह जरूरी नहीं है, न यह उचित है कि युवकों और युवतियों के बीच सहज आकर्षण पर सामाजिक या सरकारी पुलिस बैठाई जाए। इस प्रकार अब तक सास-बहू के कलह में अकसर सास का दोष देखने के आदी प्रगतिवादी लोग भी अब बहू के द्वारा सास के तिरस्कार को देखकर तिलमिला उठते हैं। बीते ज़माने में सास का कठोर अनुशासन और बहू का विनय दिखाई देता था। अब सास निरीह होती जा रही है और कई बहुएँ दुर्विनीत और उददंड व्यवहार करती हैं। दोष केवल बहू का ही नहीं, बेटे का भी होता है; बल्कि बेटे का ज़्यादा। वस्तुतः मर्यादा, विवेक और शालीनता, सम्यक शिष्टाचार के साथ एक संतुलित समीकरण की ओर ले जाना आवश्यक हो गया है। अन्यथा जिन पारंपरिक-पारिवारिक मूल्यों का हम गर्व से उद्घोष करते रहे हैं, वे प्रदूषित होकर विनष्ट हो जाएँगे। क्या सही है, और क्या गलत, उनके बीच सीमा-रेखा खींचते हुए यह विचारणीय और वांछनीय है कि हमारी प्रगति, समृद्धि और शिक्षा अपसंस्कृति का वाहन और माध्यम न बने।

क आज क्या लुप्त हो गया है?

ख कौन-सी पीढ़ी किसकी सोच को बेकार कहती है?

ग प्रगतिवादी लोग भी किसे देखकर तिलमिला उठते हैं?

घ लेखक ने किसका दोष ज़्यादा माना है?

ङ लेखक ने क्या विचारणीय माना है?

च. विलोम शब्द लिखिएः-

i पूर्ववर्ती -

ii विकर्षण -

छ. प्रत्यय छाँटकर लिखिएः-

i शालीनता -

ii पारिवारिक –

ज. वर्ण–विच्छेद कीजिएः–

i आकर्षण –

ii अन्यथा –

झ. समास का भेद बताइएः–

i शादी–ब्याह

ञ 'तिलमिला उठना' मुहावरे का इस प्रकार वाक्य–प्रयोग कीजिए कि उसका अर्थ स्पष्ट हो जाए।

अपठित पद्यांश

प्रश्न निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिएः-

I जिस पर गिर कर उदर दरी से तुमने जन्म लिया है।
जिसका खाकर अन्न, सुधा-सम नीर, समीर पिया है।
वह स्नेह की मूर्ति दयामयि माता तुल्य मही है।
उसके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है?
केवल अपने लिए सोचते, मौज भरे गाते हो।
पीते, खाते, सोते, जगते, हँसते, सुख पाते हो।
जग से दूर, स्वार्थ-साधन ही सतत तुम्हारा यश है।
सोचो, तुम्हीं, कौन अग-जग में तुम सा स्वार्थ विवश है?
पैदा कर जिस देश जाति ने तुमको पाला-पोसा।
किए हुए हैं वह निज-हित का तुमसे बड़ा भरोसा।
उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्तव्य तुम्हारा।
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा।

क मातृभूमि से मनुष्य क्या-क्या प्राप्त करता है?

ख प्रस्तुत पंक्तियों में धरती की तुलना किससे की गई है?

ग उपरोक्त काव्यांश में मनुष्य की किस प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है?

घ कवि के अनुसार मनुष्य का प्रथम कर्तव्य क्या होना चाहिए?

ङ उपरोक्त काव्यांश का मुख्य संदेश क्या है?

च. 'सत्कर्तव्य' से कवि का क्या अभिप्राय है?

छ. विलोम शब्द लिखिएः-

i. ऋण -

ii. विष -

iii. हित -

iv. स्वार्थ -

ज. दो–दो समानार्थी शब्द लिखिएः–

i. वसुधा –

ii. सुधा –

iii. समीर –

iv. स्नेह –

II फूटा प्रभात, फूटा विहान
वह चले रश्मि के प्राण, विहग के मधुरगान, मधुर निर्झर के स्वर
झर–झर, झर–झर।
प्राची का अरुनाभ क्षितिज,
मानो अंबर की सरसी में,
फूला कोई रक्तिम गुलाब, रक्तिम सरसिज
धीरे–धीरे,
लो, फैल चली आलोक रेख
धुल गया तिमिर, बह गई निशा;
चहुँ ओर देख,
धुल रही विभा, विमलाभ कांति।
अब दिशा–दिशा
सस्मित,
विस्मित,
खुल गए द्वार, हँस रही उषा।
खुल गए द्वार, दृग खुले कंठ
खुल गए मुकुल
शतदल के शीतल कोषों से निकला मधुकर गुंजार लिए
खुल गए बंध, छवि के बंधन
जागो जगती के सुप्त बाल।
पलकों की पंखुरियाँ खोलो, खोलो मधुकर के अलस बंध द्रग भर
समेट तो लो यह श्री, यह कांति
वही आती दिगंत से यह छवि की सरिता अमंद
झर–झर, झर–झर।

क सूर्योदय होते ही पूर्व दिशा में क्या हो जाता है?

ख प्रातःकाल होते ही भँवरे पर क्या प्रभाव पड़ता है?

ग धरती पर सोने वाले बच्चों से जागने के लिए क्यों कहा गया है?

घ प्रस्तुत कविता का मुख्य भाव क्या है?

ङ काव्यांश का उचित शीर्षक क्या हो सकता है?

III वह आता–
दो टूक कलेजे के करता, पछताता
पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी–भर दाने को– भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया–दृष्टि पाने की ओर बढ़ाए।
भूख से सूख ओंठ जब जाते
दाता–भाग्य–विधाता से वे क्या पाते?
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

क उपरोक्त पद्यांश किस विषय पर है?

ख पेट पीठ एक होने का क्या आशय है?

ग पद्यांश में कैसी सामाजिक स्थिति का चित्रण है?

घ भिखारी के पछताने का क्या कारण हो सकता है?

ङ आँसुओं के घूँट पीने का क्या अर्थ है?

IV है अंधेरी रात
पर दीवा जलाना कब मना है?
कल्पना के हाथ से कमनीय
जो मंदिर बना था,
भावना के हाथ ने जिसमें
वितानों को तना था,
स्वप्न ने अपने करों से
था जिसे रुचि से सँवारा,
स्वर्ग के दुष्प्राप्य रंगों से,
रसों से जो सना था,
ढह गया वह तो जुटाकर
ईंट, पत्थर, कंकड़ों को,
एक अपनी शांति की
कुटिया बनाना कब मना है?
है अँधेरी रात,
पर दीवा जलाना कब मना है?

क 'अंधेरी रात' से कवि का क्या आशय है?

ख 'दीवा' किसका प्रतीक है?

ग कैसे लोग अपने महलों के ढह जाने पर दोबारा एक कुटिया भी नहीं बना पाते?

घ उपरोक्त काव्यांश के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है?

ङ 'करों' से कवि का क्या आशय है?

V यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते।
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।।
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे।।
परिमल हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है।
हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।।
आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।।
वायु चले पर मंद चाल से उसे चलाना।
दुख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना।।
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे।
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे।।
लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले।।
किंतु न तुम उपहार-भाव आकर दरसाना।
स्मृति में पूजा-हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।।

क कवि ऋतुराज से क्या प्रार्थना कर रहा है?

ख कवि बसंत को बाग में धीरे से आने की प्रार्थना क्यों कर रहा है?

ग कवि बसंत से फूलों को लाने की प्रार्थना क्यों कर रहा है?

घ बाग खून से क्यों सना हुआ है?

ङ काव्यांश के लिए उचित शीर्षक बताइए।

च. 'ऋ' का प्रयोग करते हुए दो शब्द लिखिए।

छ. वर्ण-विच्छेद कीजिए:-

i दृग -

ii भ्रमित -

VI एक सुनहली किरण उसे भी दे दो
भटक राह जो अँधियाली के वन में
लेकिन जिसके मन में
अभी शेष है चलने की अभिलाषा
एक सुनहली किरण उसे भी दे दो।
मौन, कर्म में निरत,
बद्ध पिंजर में व्याकुल
भूल गया जो दुख जतलाने वाली भाषा
उसको भी वाणी के कुछ क्षण दे दो।
तुम जो सजा रहे हो
ऊँची फुनगी पर के ऊर्ध्वमुखी
नव-पल्लव पर आभा की किरणें,
तुम जो जगा रहे हो
दल के दल कमलों की आँखों के
सब सोये सपने,
तुम जो बिखराते हो भू पर
राशि-राशि सोना
पथ को उद्भासित करने
एक किरण से
उसका भी माथा उद्भासित कर दो।
एक स्वप्न उसके भी सोये मन में
जागृत कर दो
एक सुनहली किरण उसे भी दे दो।

क कवि एक सुनहली किरण किसे देने की बात कर रहा है?

ख कवि वाणी के क्षण किसे देने की बात कर रहा है?

ग ‘फुनगी’ शब्द का क्या अर्थ है?

घ ‘एक किरण से उसका भी माथा उद्‌भासित कर दो’ से कवि का क्या अभिप्राय है?

ङ काव्यांश के लिए उचित शीर्षक बताइए।

च. शब्दों को शुद्‌ध कीजिएः-

i विषेशण -

ii विष्मता -

iii विश -

iv विषाखा -

छ. अनुस्वार और अनुनासिक का उचित स्थान पर प्रयोग कीजिएः-

i ऊचाई -

ii मागना -

iii अधकार -

iv बूद -

VII मानना चाहता है आज ही?
तो मान ले
त्योहार का दिन
आज ही होगा।
उमंगें यों अकारण ही नहीं उठतीं।
न अनदेखे इशारों पर,
कभी यों नाचता है मन।
खुले-से लग रहे हैं द्वार मंदिर के
बढ़ा पग-
मूर्ति के शृंगार का दिन
आज ही होगा।
न जाने आज क्यों जी चाहता है
स्वर मिलाकर
अनसुने स्वर में किसी के
कर उठे जयकार।
न जाने क्यों
बिना पाए हुए ही दान,
याचक मन
विकल है
व्यक्त करने के लिए आभार।
कोई तो, कहीं तो,
प्रेरणा का स्रोत होगा ही,
उमंगें यों अकारण ही नहीं उठतीं,
नदी में बाढ़ आई है,
कहीं पानी गिरा होगा।

क त्योहार मनाने के लिए क्या आवश्यक है?

ख अनदेखे इशारों से कवि का क्या अभिप्राय है?

ग ‘स्वर मिलाकर’ से कवि क्या कहना चाहता है?

घ कवि ने मन को याचक क्यों माना है?

ङ ‘कहीं नदी में बाढ़ आई है कहीं पानी गिरा होगा’ से कवि का क्या अभिप्राय है?

VIII अरे चाटते जूठे पत्ते जिस दिन मैंने देखा नर को
उस दिन सोचा; क्यों न लगा दूँ आज आग इस दुनिया भर को?
यह भी सोचा; क्यों न टेंटुआ घोंटा जाए स्वयं जगपति का?
जिसने अपने ही स्वरूप को रूप दिया इस घृणित विकृति का।
जगपति कहाँ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढेरी;
वरना समता-संस्थापन में लग जाती क्यों इतनी देरी?
छोड़ आसरा अलख शक्ति का; रे नर, स्वयं जगपति तू है,
तू यदि जूठे पत्तल चाटे, तो तुझ पर लानत है, थू है।
ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मज़लूम, अरे चिरदोहित,
तू अखंड मंजर शक्ति का; जाग, अरे निद्रा-सम्मोहित;
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे,
अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे।

क क्या देखकर कवि के मन में उथल-पुथल मच गई?

ख 'टेंटुआ घोंटा जाए' से कवि का अभिप्राय है :

ग कवि दुनिया भर में आग क्यों लगाना चाहता है?

घ कवि ने 'अरे पराजित' कहकर किसे संबोधित किया है?

ङ 'रे नर, स्वयं जगपति तू है' का क्या तात्पर्य है?

च. अनुस्वार और अनुनासिक का सही प्रयोग कीजिएः-

i सस्था -

ii मजिल -

iii अबा -

छ. विलोम शब्द लिखिएः-

i खंडित -

ii पराजय -

iii घृणा -

वर्ण–विचार

प्रश्न निम्नलिखित शब्दों का वर्ण–विच्छेद कीजिएः–

1 उज्ज्वल –

2 मारणास्त्र –

3 शृंगार –

4 लक्ष्मी –

5 पृष्ठभूमि –

6 विनम्रता –

7 व्यवस्था –

8 श्रद्धा –

9 दरिद्र –

10 कंगन –

11 आँख –

12 परिश्रम –

13 बच्चा –

14 पर्वत –

15 राजपत्रित –

16 ज्ञापन –

17 वंश –

18 पंडित –

19 कृति –

20 लंबाई –

21 संहार –

22 पशुपति –

23 ज्ञानवान –

24 कक्षा –

25 बाहुबल –

26 स्रोत –

27 प्रेम –

28 संवाद –

29 परिश्रुत –

30 क्षत्रिय –

प्रश्न वर्ण–संयोग कीजिएः–

1 त्+ओ+प्+अ+ख्+आ+न्+आ=

2 ह्+अं+स्+अ=

3 ह्+र्+अ+स्+व्+अ=

4 ग्+य्+आ+र्+अ+ह्+अ=

5 न्+इ+ष्+ठ्+आ=

6 स्+म्+अ+र्+अ+ण्+अ=

7 प्+र्+ए+म्+अ=

8 द्+ई+व्+आ+न्+अ=

9 न्+ई+ल्+आ+म्+ई=

10 औ+र्+अ+त्+अ=

11 क्+आ+न्+त्+आ=

12 ह्+इ+न्+द्+ई=

13 अ+व्+व्+अ+ल्+अ=

14 स्+व्+अ+स्+थ्+अ=

15 स्+अ+क्+ष्+अ+म्+अ=

16 ग्+ऋ+ह्+अ=

17 भ्+आ+स्+क्+अ+र्+अ=

18 न्+इ+र्+ध्+आ+र्+इ+त्+अ=

19 ट्+ऐ+क्+स्+अ=

20 व्+ऐ+ज्+ञ्+आ+न्+इ+क्+अ=

प्रश्न सही स्थान पर अनुस्वार अथवा अनुनासिक लगाइएः-

1 पूछ -

2 मुह -

3 नीव -

4 दूगा –

5 घूघट –

6 तुम्हे –

7 सकल्प –

8 यत्र –

9 स्वय –

10 इसान –

11 सगठन –

12 सपत्ति –

13 नापसद –

14 अखड –

15 सपूर्ण –

16 सभव –

17 स्वच्छद –

18 स्वतत्र –

19 आकाक्षा –

20 ऊट –

21 पकज –

22 पाच –

23 चाद –

24 सस्थान –

25 कुआ –

प्रश्न निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध कीजिएः–

1 सकंल्प –

2 हसँना –

3 गेदँ –

4 अतंर –

5 सन्चयन –

6 सशंय –

7 ठडं –

8 सुँदर –

9 धधाँ –

10 चँबा –

11 गभीरं –

12 व्यजंन –

13 हँस (पक्षी) –

14 सबंधं –

15 सन्यासी –

16 सँयुंक्त –

17 ससार –

18 अन्ग –

19 बिदुँ –

20 सँस्कार –

प्रश्न उपयुक्त स्थानों पर नुक्ते का प्रयोग कीजिए :–

1 इस्तीफा –

2 जोरदार –

3 फारसी –

4 कर्ज –

5 मरीज –

6 मर्ज –

7 जरूर –

8 जेवर –

9 जमींदार –

10 फतवा –

11 फिदा –

12 तूफ़ान –

13 जोर –

14 खुदा –

15 फरमाइश –

16 राज –

17 जब्त –

18 फर्श –

19 फैसला –

20 रफ़ू –

प्रश्न उपयुक्त स्थानों पर अद्र्धचंद्राकार (ॅ) लगाइए :–

1 फ़ार्म

2 कापी

3 कालेज

4 फुटबाल

5 आफिस

6 डालर

7 कालम

8 डाक्टर

9 काटन

10 हाल

11 कामन

12 काटेज

13 मार्डन

14 गाड

15 नावल्टी

प्रश्न ‘र’ की अशुद्धियों को दूर कर शब्द फिर से लिखिएः–

1 वरषित –

2 मूरति –

3 चरम –

4 धरमारथ –

5 गर्व –

6 किरपा –

7 शरेय –

8 तिरशूल –

9 श्रर्मिक –

10 शुरु

11 गुरु –

12 ग्रहिणी –

13 गर्ह –

14 डर्म –

15 सव्र –

16 प्रर्काश –

17 कीरति –

18 सर्कमक –

19 शुरुआत –

20 रुप –

21 आर्शीवाद –

22 कर्मधार्य –

23 प्रारर्थना –

24 परिकरमा –

25 जागरुक –

26 स्म्रति –

27 विद्यारर्थी –

28 क्रिपा –

29 ग्रिह –

30 कोर्ट्र –

31 परणाम –

32 पवितर –

33 चितर –

34 मित्र –

35 संस्कृति –

36 हस्ताक्षर –

37 श्रंगार –

38 हर्दय –

39 श्राप –

40 सवर्नाम –

उपसर्ग–प्रत्यय

प्रश्न निम्नलिखित उपसर्गों से दो–दो शब्द बनाइएः–

1 अधि –

2 परि –

3 पुरा –

4 स –

5 कु –

6 अन –

7 अध –

8 ऐन –

9 नि –

10 अल –

11 बे –

12 हम –

13 दुर् –

14 प्र –

15 स्व –

16 प्रति –

17 सु –

18 वि –

19 खुश –

20 अव –

21 भर –

22 गैर –

23 हर –

24 अप –

25 न –

प्रश्न निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग तथा मूल शब्द पृथक कीजिएः–

1 प्राक्कथन –

2 सजीव –

3 कुपुत्र –

4 हमदर्दी –

5 भरपेट –

6 प्रदर्शन –

7 अंतर्मन –

8 खुशकिस्मत –

9 पराजय –

10 अनमोल –

11 प्रभाव –

12 परिक्रमा –

13 गैरकानूनी –

14 नालायक –

15 प्रफुल्लता –

16 सपूत –

17 कुकर्म –

18 खुशदिल –

19 कमउम्र –

20 स्वतंत्र –

21 अलिप्त –

22 निरोग –

23 सहचर –

24 नास्तिक –

25 अनमोल

प्रश्न निम्नलिखित प्रत्यय से दो–दो नए शब्द लिखिएः–

1 अक –

2 अक्कड़ –

3 आकू –

4 आवट –

5 औती –

6 आहट –

7 ची –

8 मंद –

9 दान –

10 दानी –

11 खोर –

12 गीरी –

13 खाना –

14 तम –

15 नीय –

16 एरा –

17 ना –

18 आपा –

19 हार –

20 ईला –

21 कार –

22 आनी –

23 त्व –

24 इक –

25 ई –

प्रश्न **निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग–अलग करके लिखिएः–**

1 तैराक –

2 फलित –

3 स्थिरता –

4 दैनिक –

5 पौराणिक –

6 ओढ़ना –

7 भिडंत –

8 पियक्कड़ –

9 बसेरा –

10 घबराहट –

11 बुढ़ापा –

12 पालनहार –

13 धार्मिक –

14 रंगीला –

15 देवत्व –

16 पत्रकार –

17 पीलापन –

18 बुराई –

19 फिरौती –

20 दिखावा –

21 घटती –

22 धनवान –

23 जेठानी –

24 सांप्रदायिक –

25 कमेरा –

संधि

प्रश्न निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिएः-

1 वेद + अंत =

2 रेखा + अंकित =

3 राम + गमन =

4 वीर + अंगना =

5 अधिक + अंश =

6 रत्न + आकर =

7 विद्या+ अर्थी =

8 सम् + विधान =

9 भानु + उदय =

10 अभि + इष्ट =

11 सत्+ जन =

12 उत् + नति =

13 सु + उक्ति =

14 लघु + ऊर्मि =

15 वार्ता + आलाप =

16 उत् + लास =

17 वाक् + ईश =

18 सत् + उपयोग =

19 शुभ + आरंभ =

20 उत् + घाटन

21 रवि + इंद्र =

22 रजनी + ईश =

23 सत् + वाणी =

24 जगत् + अंबा

25 तत् + अनुसार =

26 मनः + गति =

27 निः + पक्ष =

28 सरः + ज =

29 तिरः + कार =

30 यशः + गान =

प्रश्न निम्नलिखित शब्दों में सधि–विच्छेद कीजिएः–

1 रामावतार –

2 स्वार्थ –

3 उन्माद –

4 शिवालय –

5 उद्‌गम –

6 भगवद्‌गीता –

7 निस्सार –

8 धर्मात्मा –

9 सदुपयोग –

10 नीलाकाश –

11 शिक्षार्थी –

12 उद्‌गम –

13 संदेह –

14 सेवार्थ –

15 महाशय –

16 संजीवनी –

17 मुनीश्वर –

18 नदीश –

19 यथोचित –

20 प्राणायाम –

21 संवाद –

22 पुरोहित –

23 उल्लेख –

24 गुरुपदेश –

25 सोमेश –

26 दुराचार –

27 विषम –

28 अतीव –

29 संजीवनी –

30 दिगंबर –

विराम–चिह्न

प्रश्न सही विकल्प छाँटकर लिखिएः–

1 , विराम–चिह्न का नाम है :
i पूर्ण विराम
ii अल्प विराम
iii अद्‌र्ध विराम
iv कोष्ठक

2 ‘‘ ’’ विराम–चिह्न का नाम है :
i लाघव चिह्न
ii विवरण चिह्न
iii निर्देशक चिह्न
iv उद्‌धरण चिह्न

3 ‘ : ’ विराम–चिह्न का नाम है :
i अल्प विराम
ii पूर्ण विराम
iii अद्‌र्ध विराम
iv उपविराम

4 ‘?’ विराम–चिह्न का नाम है :
i निर्देशक चिह्न
ii प्रश्नवाचक चिह्न
iii त्रुटिपूरक
iv कोष्ठक

5 ‘। ’ विराम–चिह्न का नाम है :
i विस्मयवाचक चिह्न
ii पूर्ण विराम
iii अल्प विराम
iv लाघव चिह्न

6 ‘०’ विराम–चिह्न का नाम है :
i त्रुटिपूरक चिह्न
ii अल्प विराम
iii योजक चिह्न
iv लाघव चिह्न

7 ‘ ––’ विराम–चिह्न का नाम है :
i निर्देशक चिह्न
ii अल्प विराम
iii अद्‌र्ध विराम
iv उपविराम

8 ‘ ; ’ विराम–चिह्न का नाम है :

i पूर्ण विराम

ii उपविराम

iii अद्‌र्ध विराम

iv अल्प विराम

9 ‘ ! ’ विराम–चिह्न का नाम है :

i उपविराम

ii अल्प विराम

iii पूर्ण विराम

iv विस्मयादिवाचक चिह्न

10 ‘ :– ’ विराम–चिह्न का नाम है :

i उपविराम

ii योजक चिह्न

iii कोष्ठक

iv विवरण चिह्न

प्रश्न निम्नलिखित वाक्यों में विराम–चिह्न लगाइएः–

1 स्त्री बस आप इस मुकदमे को ले लें मैं आपको तीन हज़ार रू दूँगी

2 मेरा बचपन क्या हाल की बात है

3 उन चार चेहरों के आठ आठ जोड़ी दाँत आहा मानो धूप में रखे आईने की तरह चमक उठते

4 जब तक अलाव जलते रहेंगे तब तक आग बची रहेगी सामूहिकता बचा रहेगा खुलकर कह सुन सकने का चलन

5 हम कर्मशील बनें हमारी कारीगरी बढ़े तभी हमारा भाग्योदय होगा

6 उसने उनके कान में जाकर कहा उठो मियाँ उठो जागो जागने का वक़्त है

7 हाँ देख लेना तुम ताना मार रहे हो लेकिन मैं दिखा दूँगा धन को कितना तुच्छ समझता हूँ

8 धन के लिए माँ बाप भाई बंद सबसे अलग यहाँ पड़ा हूँ न जाने अभी कितनी सलामियाँ देनी पड़ेंगी कितनी खुशामद करनी पड़ेगी

9 अब कहाँ जाओगे यहीं सो रहो और बातें हों तुम तो कभी आते भी नहीं

10 मलिक जी जैसे सेवाव्रती निश्छल व्यक्ति भगवान की याचना अनुग्रह से ही मिलते हैं बिनु हरि कृपा मिलहिं नहीं संता

11 यह सब तो हुआ पर वर्मा जी को जैसे गुरुमंत्र ही मिल गया अगर पीड़ा है तो आशा भी है

12 उन्होंने निष्कर्ष दिया ज़्यादती उनकी है गलती हमारी मैंने पूछा गलती कौन सी

13 उसके साथ कुछ मिठाई नमकीन बिस्कुट कोई मौसमी फल जैसे सेब

अमरूद केला संतरा यानी कि जी खोल कर स्वागत होता

14 उन दिनों फ़ोटो नहीं खींची जाती थी भला यह कैसे कहा जा सकता है बात है कितनी पुरानी विधान बाबू का बचपन अभी तीस पैंतीस साल पहले की ही तो बात है

15 मुझे क्या परेशानी होगी चल तो तुम रहे हो दिन में दस बीस मील गरम रेत पर मैं तो मज़े से बैठा हूँ कंधे पर

शब्द और पद

प्रश्न–1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिएः–

क. शब्द और पद में क्या अंतर है? उदाहरण सहित समझाइए।

ख. शब्द पद कब बनता है? उदाहरण सहित समझाइए।

प्रश्न–2 रेखांकित पदों का भेद बताइएः–

1 मोहित बाज़ार गया है।

2 आप भी हमारे साथ चलिए।

3 धीरे–धीरे चलो।

4 वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

5 घर के भीतर चलो।

6 मेरे पास नीला पेन है।

7 चार किलो चावल लेते आना।

8 मीरा और सुमेधा मेरे घर आईं थीं।

9 कम बोलो।

10 मैं भी मुस्कान के साथ चली जाती हूँ।

11 माताजी ने माली से पौधों को पानी दिलवाया।

12 मेरा भाई सो रहा है।

13 छी:! कितनी गंदगी है यहाँ।

14 मेरे घर के पास मंदिर है।

15 मैंने खूब मेहनत की थी इसीलिए अच्छे अंक मिले हैं।

समास

प्रश्न–1 निम्नलिखित का समास विग्रह कर भेद बताइए:–

1 यशप्राप्त –

2 पतझड़ –

3 आसमुद्र –

4 तिरंगा –

5 यथासंभव –

6 दिनचर्या –

7 सप्तर्षि –

8 संसारसागर –

9 पुरुषोत्तम –

10 चिंतामग्न –

11 उद्‌योगपति –

12 अठन्नी –

13 त्रिलोक –

14 पंकज –

15 परलोकगमन –

16 ग्रामगत –

17 आमरण –

18 नगराज –

19 रुपए–पैसे –

20 सिर में दर्द –

21 पीतांबर –

22 मेघनाद –

23 त्रिलोचन –

24 लंबोदर –

25 चतुर्भुज –

प्रश्न–2 निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिएः–

1 नियम के अनुसार –

2 चंद्र के सामन है जो मुख –

3 सत् है जो जन –

4 शोक से आकुल –

5 बिना खटके –

6 दिन और रात –

7 गृह को आगत –

8 चार पायों का समूह –

9 गिरि का धारण किया है जिसने अर्थात् कृष्ण –

10 राम की भक्ति –

11 कला में कुशल –

12 कमल के समान चरण –

13 राधा और कृष्ण –

14 नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव –

15 मक्खन को चुराने वाला–

16 मृग के समान नेत्रों वाली (सुंदर स्त्री) –

17 माता और पिता –

18 ऋण से मुक्त –

19 तीन रंगों का ध्वज –

20 कनक के समान लता –

21 सेना का नायक –

22 अन्न और जल –

23 हाथ ही हाथ में –

24 आप पर बीती –

25 निशा में विचरण करने वाला अर्थात् राक्षस –

अशुद्धि–शोधन

प्रश्न–1. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिएः–

1 वह कमर कसा बैठा है।

2 मोर के पास सुंदर पंख होते हैं।

3 अनेकों व्यक्तियों में प्रदर्शिनी देखी।

4 गुणवान स्त्री सर्वत्र पूजी जाती है।

5 लड़के ने रोटी खाया।

6 मेरे को दूध अच्छा नहीं लगता।

7 तुम्हारी पुस्तक कब आएगा?

8 तुम्हारा यह बात सुनने की कृपा करें।

9 हम उसके पास से आ रहा हूँ।

10 छोटे उम्र में उसके मौत हो गया।

11 हमने तो तुम्हें मना करा था।

12 पुस्तक मेज़ में रखा है।

13 उसके मन में दयालुता नहीं है।

14 मेरे तो यहाँ अनेकों लोग परिचित हैं।

15 छोटे उम्र में उसके मौत हो गया।

16 हमने तो तुम्हें मना करा था।

17 वह लोग कहाँ रहता है?

18 तुम्हारी पिता जी कल आने वाली हैं।

19 क्या आप भोजन किए हैं?

20 इस भवन के गिरने का संदेह है।

21 उनका बहुत भारी सम्मान हुआ।

22 उसके मुँह से तो फूल गिरते हैं।

23 हम परस्पर आपस में लड़ते हैं।

24 मनहर की तो तकदीर ही टूट गई।

25 पुलिस के आते ही चोर दुम उठाकर भाग गया।

वाक्य

प्रश्न–1 कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्य–परिवर्तन कीजिएः–

1 पुलिस ने गोली चलाकर भीड़ तितर–बितर की। (संयुक्त वाक्य)

2 बालक रोता रहा और चुप हो गया। (सरल वाक्य)

3 साहसी विद्यार्थी उन्नति करते हैं। (मिश्र वाक्य)

4 गुरु जी आए और कक्षा चुप हो गई। (सरल वाक्य)

5 रात के बारह बजे मैंने पढ़ना बंद कर दिया। (संयुक्त वाक्य)

6 नीरजा ने कहानी सुनाई और नमिता रो पड़ी। (मिश्र वाक्य)

7 धूप निकली और हम छत पर खेलने गए। (मिश्र वाक्य)

8 रात के बारह बजे मैंने पढ़ना बंद कर दिया। (संयुक्त वाक्य)

9 ज्यों ही अलार्म बजा वह उठकर खड़ी हो गई। (सरल वाक्य)

10 रोमा ने कहानी सुनाई और नेहा रो पड़ी। (मिश्र वाक्य)

11 यदि तुम निराश न हुए, तो अवश्य मैच जीत लोगे। (संयुक्त वाक्य)

12 अध्यापिका कक्षा में आई और सभी चुप हो गए। (सरल वाक्य)

13 बिच्छू के काटने पर मीना चीखने लगी। (संयुक्त वाक्य)

14 वह चोरी करके भाग रहा था लेकिन पुलिस ने पकड़ लिया। (मिश्र वाक्य)

15 उसे फल खरीदने थे इसलिए वह बाज़ार गया। (सरल वाक्य)

16 मेरे पास चाबी से चलने वाला खिलौना है। (संयुक्त वाक्य)

17 उनका विचार शीघ्र जाने का है। (मिश्र वाक्य)

18 सलोनी पुस्तकें खरीदने के लिए पुस्तक मेले में गई। (संयुक्त वाक्य)

19 जैसे ही शाम हुई, वह चली गई। (सरल वाक्य)

20 मैंने जब वे कविताएँ पढ़ीं तो मेरी आँखें भीग गईं। (संयुक्त वाक्य)

21 रात्रि के आठ बजे और मैंने पढ़ना बंद कर दिया। (मिश्र वाक्य)

22 मुझे सरकारी नौकरी करने वाली पत्नी चाहिए। (मिश्र वाक्य)

23 रोता हुआ बच्चा साइकिल से टकराया और गिर पड़ा। (सरल वाक्य)

24 मज़दूर को खूब मेहनत करने पर भी उसका लाभ नहीं मिलता। (संयुक्त वाक्य)

25 रात होते ही आकाश में तारों का मेला लग गया। (मिश्र वाक्य)

धूल

प्रश्न–1. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम–से–कम उस पर पैर तो रखे। किसान के हाथ–पैर, मुँह पर छाई हुई यह धूल हमारी सभ्यता से क्या कहती है? हम काँच को प्यार करते हैं, धूलि भरे हीरे में धूल ही दिखाई देती है, भीतर की काँति आँखों से ओझल रहती है, लेकिन ये हीरे अमर हैं और एक दिन अपनी अमरता का प्रमाण भी देंगे। अभी तो उन्होंने अटूट होने का ही प्रमाण दिया है – ''हीरा वही घन चोट न टूटे।'' वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा। तब हम हीरे से लिपटी हुई धूल को भी माथे से लगाना सीखेंगे।

क. लेखक देशभक्ति की बात कहकर क्या कहना चाहता है?

ख. अमर हीरे किन्हें कहा गया है?

ग. 'हीरा वही घन चोट न टूटे' – का व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए।

घ. काँच और हीरा किनके प्रतीक हैं? इनका भेद कब पता चलेगा?

प्रश्न –2. इस पाठ में नगरीय सभ्यता पर क्या–क्या व्यंग्य किए गए हैं? लोग इसे ग्रामीण सभ्यता से किस प्रकार भिन्न मानते हैं?

दुख का अधिकार

प्रश्न –1. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

बाज़ार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूज़े डलिया में और कुछ ज़मीन पर बिक्री के लिए रखे जान पड़ते थे। खरबूज़ों के समीप एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। खरबूज़े बिक्री के लिए थे, परंतु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? खरबूज़ों को बेचनेवाली तो कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखे फफक-फफककर रो रही थी।

पड़ोस की दुकानों के तख्तों पर बैठे या बाज़ार में खड़े लोग घृणा से उसी स्त्री के संबंध में बात कर रहे थे। उस स्त्री का रोना देखकर मन में एक व्यथा-सी उठी, पर उसके रोने का कारण जानने का उपाय क्या था? फुटपाथ पर उसके समीप बैठ सकने में मेरी पोशाक ही व्यवधान बन खड़ी हो गई।

क. पाठ एवं लेखक का नाम बताइए।

ख. बाज़ार में लोग क्या कर रहे थे?

ग. कोई खरबूज़ों को खरीदने के लिए आगे क्यों नहीं बढ़ रहा था?

घ. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

ङ. लेखक स्त्री के रोने का कारण क्यों न जान सका?

एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा

प्रश्न –1. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

इस समाचार के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाए अवसाद को देखकर हमारे नेता कर्नल खुल्लर ने स्पष्ट किया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी–कभी मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए। उपनेता प्रेमचंद, जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे, २६ मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने हमारी पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से हमें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल ने कैंप एक (६००० मी०), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है और बर्फ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

क. पाठ एवं लेखक का नाम बताइए।

ख. कर्नल खुल्लर ने क्या स्पष्ट किया?

ग. अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहे थे? उन्होंने किससे अवगत कराया?

घ. उन्होंने क्या–क्या काम पूरे होने के बारे में बताया?

ङ. हिमपात के कारण क्या काम दोबारा करना पड़ सकता था?

प्रश्न –2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे किन शब्दों में बधाई दी?

तुम कब जाओगे अतिथि

प्रश्न –1. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए। अब भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप प्रदान नहीं करते तो हमें उपवास तक जाना होगा। तुम्हारे–मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुज़र रहे हैं। तुम्हारे जाने का यह चरम क्षण है। तुम जाओ न अतिथि!

तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है न! मैं जानता हूँ। दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं। होम को इसी कारण स्वीट–होम कहा गया है कि लोग दूसरों के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें। तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, पर सोचो प्रिय, कि शराफत भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है।

क. पाठ एवं लेखक का नाम बताइए।

ख. 'सत्कार की ऊष्मा' समाप्त होने से लेखक का क्या आशय है? इसका क्या परिणाम हुआ?

ग. लेखक के अनुसार उपवास तक क्यों जाना पड़ेगा?

घ. लेखक अतिथि के जाने के लिए यह चरम क्षण है, क्यों कहता है?

ङ. लेखक क्या बात जानता है?

च. होम को 'स्वीटहोम' क्यों कहा गया है?

प्रश्न –2. 'तुम कब जाओगे, अतिथि!' पाठ के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

वैज्ञानिक चेतना के वाहक

प्रश्न निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

पेड़ से सेब गिरते हुए तो लोग सदियों से देखते आ रहे थे, मगर गिरने के पीछे छिपे रहस्य को न्यूटन से पहले कोई और समझ नहीं पाया था। ठीक उसी प्रकार विराट समुद्र की नील-वर्णीय आभा को भी असंख्य लोग आदिकाल से देखते आ रहे थे, मगर इस आभा पर पड़े रहस्य के परदे को हटाने के लिए हमारे समक्ष उपस्थित हुए सर चंद्रशेखर वेंकट रामन। बात सन १९२१ की है, जब रामन समुद्री यात्रा पर थे। जहाज के डेक पर खड़े होकर नीले समुद्र को निहारना, प्रकृति प्रेमी रामन को अच्छा लगता था। वे समुद्र की नीली आभा में घंटों खोए रहते। लेकिन रामन केवल भावुक प्रकृति प्रेमी ही नहीं थे। उनके अंदर एक वैज्ञानिक की जिज्ञासा भी उतनी ही सशक्त थी। यही जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी – 'आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है? कुछ और क्यों नहीं? रामन सवाल का जवाब ढूँढने में लग गए। जवाब ढूँढते ही वह विश्वविख्यात बन गए।

क. चंद्रशेखर वेंकट रामन ने किस रहस्य पर से परदा हटाया?

ख. रामन को किसे निहारना अच्छा लगता था?

ग. रामन के व्यक्तित्व में क्या-क्या विशेषताएँ थीं?

घ. उनके मन में क्या जिज्ञासा थी?

प्रश्न–2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. सर चंद्रशेखर वेंकट रामन के जीवन से प्राप्त होने वाले संदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

ख. 'नोबल पुरस्कार' क्या होता है? रामन के अतिरिक्त किस–किस को विज्ञान के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया?

कीचड़ का काव्य

प्रश्न –1. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

हमारा अन्न कीचड़ में से ही पैदा होता है। इसका जाग्रत भान यदि हर एक मनुष्य को होता तो वह कभी कीचड़ का तिरस्कार न करता। एक अजीब बात तो देखिए। पंक शब्द घृणास्पद लगता है, जबकि पंकज शब्द सुनते ही कवि लोग डोलने और गाने लगते हैं। मल बिल्कुल मलिन माना जाता है किंतु कमल शब्द सुनते ही चित्त में प्रसन्नता और आह्लादकत्व फूट पड़ते हैं। कवियों की ऐसी युक्ति शून्य वृत्ति उनके सामने हम रखें तो वे कहेंगे कि ''आप वासुदेव की पूजा करते हैं इसलिए वसुदेव को तो नहीं पूजते, हीरे का भारी मूल्य देते हैं किंतु कोयले या पत्थर का नहीं देते और मोती को कंठ से बाँधकर फिरते हैं किंतु उसकी मातुश्री को गले से नहीं बाँधते।

क. पाठ एवं लेखक का नाम बताइए।

ख. किस ज्ञान के बाद मनुष्य कीचड़ का तिरस्कार नहीं करता?

ग. पंक और पंकज का संबंध स्पष्ट करते हुए बताइए कि लोग इनमें भेद क्यों करते हैं?

घ. लेखक ने कवि की किस वृत्ति को युक्ति शून्य बताया है?

ङ. कवि कीचड़ के विरोध में क्या-क्या तर्क देते हैं?

प्रश्न -2. 'कीचड़ का काव्य' पाठ के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

धर्म की आड़

प्रश्न–1. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

अजाँ देने, शंख बजाने, नाक दबाने और नमाज पढ़ने का नाम धर्म नहीं है। शुद्धाचरण और सदाचार ही धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं। दो घंटे तक बैठकर पूजा कीजिए और पंच–वक्ता नमाज भी अदा कीजिए, परंतु ईश्वर को इस प्रकार रिश्वत के दे चुकने के पश्चात् यदि आप अपने को दिन–भर बेईमानी करने और दूसरों को तकलीफ पहुँचाने के लिए आज़ाद समझते हैं तो, इस धर्म को, अब आगे आने वाला समय कदापि नहीं टिकने देगा। अब तो, आपका पूजा–पाठ न देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका अचारण होगी। सबके कल्याण की दृष्टि से, आपको अपने आचरण को सुधारना पड़ेगा और यदि आप अपने आचरण को नहीं सुधारेंगे तो नमाज और रोज़े, पूजा और गायत्री आपको देश के अन्य लोगों की आज़ादी को रौंदने और देश–भर में उत्पातों का कीचड़ उछालने के लिए आज़ाद न छोड़ सकेगी।

क. लेखक किस–किस को धर्म नहीं मानता?

ख. किस धर्म को आगे टिकने नहीं दिया जाएगा?

ग. आगे चलकर क्या बात देखी जाएगी?

घ. किस बात की आज़ादी नहीं होगी?

प्रश्न –2. 'धर्म की आड़' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

शुक्रतारे के समान

प्रश्न –1. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

बिहार और उत्तर प्रदेश के हज़ारों मील लंबे मैदान गंगा, यमुना और दूसरी नदियों के परम उपकारी, सोने की कीमत वाले 'गाद' के बने हैं। आप सौ–सौ कोस चल लीजिए रास्ते में सुपारी फोड़ने लायक एक पत्थर भी कहीं मिलेगा नहीं। इसी तरह महादेव के संपर्क में आने वाले किसी को भी ठेस या ठोकर की बात तो दूर रही, खुरदरी मिट्टी या कंकरी भी कभी चुभती नहीं थी। उनकी निर्मल प्रतिभा उनके संपर्क में आने वाले व्यक्ति को चंद्र–शुक्र की प्रभा के साथ दूधों नहला देती थी। उसमें सराबोर होने वाले के मन से उनकी इस मोहिनी का नशा कई–कई दिन तक उतरता न था।

क. कौन–से मैदान सोने की कीमत वाले गाद के बने हैं?

ख. सौ कोस चलने पर क्या अनुभव होता है?

ग. महादेव के संपर्क की क्या विशेषता थी?

घ. महादेव भाई की मोहिनी का नशा कई दिनों तक क्यों नहीं उतरता था?

प्रश्न –2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. 'शुक्रतारे के समान' पाठ के आधार पर महादेव भाई के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

ख. 'शुक्रतारे के समान' पाठ के आधार पर महात्मा गाँधी और महादेव भाई के आपसी संबंधों के बारे में लिखिए।

रैदास के पद

प्रश्न –1. निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग–अँग बास समानी।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

१ कवि को किसके नाम की रट लग गई है?

२ कवि ने प्रभु की तुलना बादल से और अपनी मोर से क्यों की है?

३ अगर प्रभु मोती है, तो कवि क्या है?

४ कवि ने प्रभु की तुलना 'दीपक' और अपनी 'बाती' से क्यों की है?

६ कवि ने अपनी और भगवान की तुलना किस-किस से की है?

५ पद में किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है?

७ विलोम लिखिए -

i स्वामी -

ii रात -

रहीम के दोहे

प्रश्न –1. निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते रहीम पशु ते अधिक, रीझेहु कछु न देत।।
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।

1 मृग नाद को सुनकर अपने प्राण क्यों त्याग देता है?

2 कुछ लोग किसके बदले अपने प्राणों की आहुति दे देते हैं?

3 दोहे के आधार पर कवि ने किन लोगों को पशुओं से भी अधिक गया–बीता कहा है?

4 लाख प्रयत्न करने पर भी बिगड़ी बात क्यों नहीं बन सकती?

5 लाख प्रयत्न करने पर भी क्या बनना मुश्किल है?

आदमीनामा

प्रश्न –1. निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिएः–

मसज़िद भी आदमी ने बनाई है यां मियाँ
बनते हैं आदमी ही इमाम और खुतबाख्वाँ
पढ़ते हैं आदमी ही कुरआन और नमाज़ यां
और आदमी ही उनकी चुराते हैं जूतियाँ
जो उनको ताड़ता है सो है वो भी आदमी।

१ ‘आदमी’ शब्द किस–किस के लिए आया है?

२ ‘जूतियाँ चुराते हुओं को ताड़ने’ – से क्या अभिप्राय है?

३ ‘इमाम’ और ‘खुतबाख्वाँ’ में क्या अंतर है?

४ ‘आदमीनामा’ लिखने का उद्देश्य क्या रहा होगा?

प्रश्न ‘आदमीनामा’ कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

एक फूल की चाह

प्रश्न –1. निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

उसे देखने मरघट को ही गया दौड़ता हुआ वहाँ,
मेरे परिचित बंधु प्रथम ही फूँक चुके थे उसे जहाँ।
बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर छाती धधक उठी मेरी,
हाय! फूल–सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी!
अंतिम बार गोद में बेटी, तुझको ले न सका मैं हा!
एक फूल माँ का प्रसाद भी तुझको दे न सका मैं हा!

१ कवि और कविता का नाम बताइए।

२ 'तुझे देखने मरघट को ही गया दौड़ता हुआ वहाँ' – किसे देखने?

३ सुखिया का पिता मरघट में समय से क्यों नहीं पहुँच पाया था?

४ 'फूल सी बच्ची' और 'राख की ढेरी होने' का क्या अर्थ है?

५ सुखिया के पिता के दिल में क्या हसरत बाकी रह गई?

प्रश्न –2. गाँवों में लोग किन अंधविश्वासों में घिरे रहते हैं और गाँवों में किस तरह की चिकित्सा सुविधाओं का अभाव नज़र आता है?

गीत–अगीत

प्रश्न –1. निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिएः–

गाकर गीत विरह के तटिनी
वेगवती बहती जाती है,
दिल हलका कर लेने को
उपलों से कुछ कहती जाती है
तट पर एक गुलाब सोचता,
''देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।''
गा–गाकर बह रही निर्झरी,
पाटल मूक खड़ा तट पर है
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

१ 'गीत–अगीत' के कवि कौन हैं?

२ नदी किनारे खड़ा कौन सोचता है?

३ 'पतझर के सपनों का गीत' – क्या हो सकता है?

४ 'दिल हलका कर लेने को' – से क्या अभिप्राय है?

५ पाटल तट पर मूक क्यों खड़ा है?

प्रश्न –2. 'गीत–अगीत' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

अग्नि पथ

प्रश्न –1 निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

। अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!
वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने, हो बड़े,
एक पत्र–छाँह भी माँग मत, माँग मत, माँग मत!
अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

१ कवि मनुष्य को क्या शपथ दिला रहा है?

२ कवि मुश्किलों को देखकर क्या कहना चाहता है?

३ 'अग्नि पथ' रचना के कवि का नाम बताइए।

४ जो व्यक्ति मुसीबतों का सामना धैर्य से करता है उसे क्या प्राप्त होता है?

५ 'एक पत्र–छाँह भी माँग मत' – में 'छाँह' शब्द से क्या आशय है?

६. कवि ने 'अग्निपथ' शब्द पर इतना बल क्यों दिया है?

प्रश्न –2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. 'जीवन – एक संघर्ष' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

अरुण कमल

प्रश्न –1. निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिएः–

।

इन नए बसते इलाकों में
जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए–नए मकान
मैं अकसर रास्ता भूल जाता हूँ
धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंज़िला
और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता।

१ प्रस्तुत काव्यांश के कवि और कविता का क्या नाम है?

२ 'नए बसते इलाकों में' कवि रास्ता क्यों भूल जाता है?

३ पुराने निशान धोखा कैसे दे जाते हैं?

४ कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?

५ 'मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ' से कवि क्या कहना चाहता है?

II कई गलियों के बीच
कई नालों के पार
कूड़े-करकट
के ढेरों के बाद
बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
उभरी नसों वाले हाथ
घिसे नाखूनोंवाले हाथ
पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
जूही की डाल से खुशबूदार हाथ
गंदे कटे-पिटे हाथ
जख्म से फटे हुए हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

१ कवि और कविता का नाम लिखिए।

२ खुशबू रचनेवाले लोग कहाँ रहते हैं?

३ इनकी दशा कैसी है?

४ खुशबू रचते हैं–से क्या अर्थ है?

५ 'बदबू से फटते जाते इस टोले के अंदर खुशबू रचते हैं हाथ' में – 'बदबू' और 'खुशबू' से कवि क्या कहना चाहते हैं –

प्रश्न –2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. 'नए इलाके में' कविता में कवि ने किस विडंबना की ओर संकेत किया है?

गिल्लू

प्रश्न –1. 'गिल्लू एक संवेदनशील प्राणी है' – स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न–2. यदि आपको महादेवी जी की तरह गिल्लू घायल अवस्था में मिला होता तो आप उसके साथ कैसा व्यवहार करते और क्यों?

स्मृति

प्रश्न –1. अगर लेखक को भाई साहब का डर न होता तो क्या वह चिट्ठियाँ न निकालता?

कल्लू कुम्हार की उनाकोटि

प्रश्न –1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. 'कल्लू कुम्हार की उनाकोटि' पाठ के आधार पर त्रिपुरा के बारे में जानकारी दीजिए।

ख. त्रिपुरा में सी.आर.पी.एफ के द्वारा किन–किन कार्यों को किया जाता है?

हामिद खाँ

प्रश्न–1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. तक्षशिला में आगजनी की खबर पढ़कर लेखक किन यादों में खो जाता है?

ख. कहानी के आधार पर हामिद खाँ का चरित्र–चित्रण कीजिए।

दिए जल उठे

प्रश्न –1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. वहाँ की जनसभा में गाँधी जी ने किसका जिक्र किया?

ख. मही नदी पर कैसा दृश्य था?

ग. 'दिये जल उठे' पाठ के आधार पर गाँधीजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

रचना खंड

पत्र–लेखन

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

अपनी नई कक्षा के बारे में बताते हुए अपने पिता को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

नई दिल्ली,

दिनांक –

आदरणीय पिताजी

सादर प्रणाम।

आशा है कि आप.....

.....

.....।

.....

.....

.....

.....

.....।

.....

.....

.....

.....

.....।

माता जी तथा भइया को प्रणाम और छुटकी को प्यार।

आपका पुत्र / पुत्री,

क. ख. ग.

पत्र

1 कक्षा नवीं में हिंदी विषय ही क्यों चुना, इस बारे में बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

2 अपनी नई कक्षा के बारे में बताते हुए पत्र लिखिए।

3 भारत की गुरु-शिष्य-परंपरा के विषय में बताते हुए पत्र लिखिए।

4 सी.सी.ई ने विद्यालयी पाठ्यक्रम का भार कम किया या ज्यादा किया, यह बताते हुए अपने पिता को पत्र लिखिए।

5 दिल्ली सरकार द्वारा महिलाओं की सुरक्षा के लिए किए गए इंतज़ाम या सरकार द्वारा चलाए गए अभियान की अच्छाई और बुराई के बारे में बताते हुए अपने भाई को पत्र लिखिए।

6 गणतंत्र दिवस पर बहादुर बच्चों को उनके साहसी कारनामों के लिए वीरता पुरस्कार दिए जाते हैं, इसके बारे में बताते हुए अपने विदेशी मित्र को पत्र लिखिए।

7 'प्रवाह' के अंतर्गत कर जाने वाली अपनी रोचक गतिविधियों के बारे में बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

8 आपको पहली बार प्रधानाचार्य के हाथों पुरस्कार प्राप्त हुआ, अपने इस अनुभव को मित्र को पत्र लिखकर बताइए।

9 अपने मामा जी को पत्र लिखकर साक्षरता अभियान में अपनी भागीदारी का वर्णन कीजिए।

10 रक्षाबंधन के अवसर पर बड़ी बहन द्वारा भेजी गई राखी के लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए तथा मन की भावनाओं को व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए।

अनुच्छेद-लेखन

1 भ्रष्टाचार : समस्या और निदान

- भ्रष्टाचार क्या है?
- भ्रष्टाचार के विभिन्न रूप यथा - रिश्वतखोरी, कालाबाज़ारी, मिलावट, जमाखोरी, तस्करी, भाई-भतीजावाद, पद का दुरुपयोग आदि।
- बेरोज़गारी
- भ्रष्टाचार रोकने के उपाय।

2 आतंकवाद : एक समस्या

- आतंकवाद क्या है?
- हत्या, लूटपाट द्वारा आतंकित करना आतंकवाद
- अशांति फैलाने का प्रयास
- आतंकवादियों के गुट या दल
- रोक लगाने के लिए अपने देश द्वारा तथा अंतर्राष्ट्रीय रूप में किए जाने वाले प्रयास।

3 भारत का प्राकृतिक सौंदर्य

- प्राकृतिक सौंदर्य का अर्थ
- भारत के समुद्र-तट, नदियाँ, पर्वत, हरियाली, रेगिस्तान
- विविध मौसम
- धर्म-संबंधी विविधताएँ आदि।

4 शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले

- देशभक्ति और शहीद
- साधारण मौत और शहीद होने में अंतर
- शहीद होना भाग्य की बात
- शहीद का जीवन सुगंध फैलाने वाले फूल की तरह।

5 आपके जीवन में शिक्षक की भूमिका

- आपकी दृष्टि में शिक्षक का अर्थ
- आपके जीवन में शिक्षक की भूमिका
- समाज और राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक का योगदान
- शिक्षा का सही उद्देश्य
- नैतिक मूल्यों का उत्थान।

6 विद्यार्थी के जीवन में अनुशासन का महत्त्व

- अनुशासन का अर्थ
- अनुशासन का महत्त्व
- अनुशासन की आवश्यकता
- छात्र जीवन में अनुशासन का महत्त्व
- अनुशासनहीनता को दूर करने के उपाय।

7 राष्ट्र की प्रमुख समस्याएँ

- भारत समस्याओं का देश
- जनसंख्या वृद्धि
- अशिक्षा
- बेरोजगारी
- समस्याओं का समाधान।

8 मधुर वचन है औषधि

- मधुर वचन का महत्त्व
- मधुर वचन से लाभ
- कटुभाषी व्यक्ति निंदा का पात्र
- यह महापुरुषों का आभूषण

9 परीक्षा का भय

- परीक्षा का अर्थ
- इसकी आवश्यकता
- परीक्षा–भय के कारण
- परीक्षा–भय को दूर करने के उपाय

10 ग्लोबल वार्मिंग

- ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ
- ग्लोबल वार्मिंग के खतरे
- उनके प्रभाव
- बचाव हेतु उपाय

11 बेकारी की समस्या

- बेकारी का अर्थ
- बेकारी–समस्या के प्रकार
- इसके कारण और दुष्परिणाम
- इसके निदान के संभावित उपाय।

12 युवा पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव

- दूरदर्शन की व्यापकता
- इसके अनेकानेक विभिन्न कार्यक्रम
- युवाओं को प्रलुब्ध करने वाले विशेष कार्यक्रम
- उनका प्रभाव

13 विज्ञापन

- विज्ञापन का अर्थ और इसकी आवश्यकता
- विभिन्न प्रकार के विज्ञापन
- विज्ञापनों के विभिन्न माध्यम
- विज्ञापनों का प्रभाव और लाभ

14 दिशाहीन भारतीय युवा–पीढ़ी

- शिक्षित होकर भी दिशाहीन
- रोज़गार न मिलना
- हताशा एवं अपराध की प्रवृत्ति
- रोज़गार तथा नैतिक शिक्षा की आवश्यकता।

15 यदि मेरी लॉटरी निकल आए तो!

- आशा पर ही संसार जीवित
- विभिन्न कल्पनाएँ
- व्यय की योजनाएँ
- स्वार्थ एवं परार्थ की भावनाओं में तालमेल बिठाने का प्रयास

संवाद–लेखन

महत्त्वपूर्ण दिशा–निर्देश

संवाद का शाब्दिक अर्थ है – बातचीत। सम्+वाद से बना है – संवाद, जिसका अर्थ है – सम्यक बोलना।

दो या दो से अधिक लोगों में हो रही बातचीत ही संवाद कहलाता है। नाटकों में संवाद का बहुत महत्त्व होता है। कक्षा में संवाद के माध्यम से विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता है।

संवाद के विषय में ध्यान रखने योग्य महत्त्वूपर्ण बिंदु –

- संवाद विषयानुकूल व भावानुकूल होने चाहिए।
- हाव–भावों को बनाने का प्रयास करना चाहिए।
- संवाद की आवाज़ इतनी अवश्य हो कि वह स्पष्ट सुनाई दे।
- संवाद कथन में आरोह–अवरोह का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

बढ़ती हुई महँगाई के विषय में पूनम और कुसुम के बीच संवाद

पूनम – कुसुम! क्या तुमने आज का अख़बार पढ़ा?

कुसुम – हाँ, बढ़ती महँगाई ने तो दिल्लीवालों का जीना हराम कर दिया है।

पूनम – अरे! तुमने पढ़ा, दूध की कीमत में और ऑटोरिक्शा के किराए में कितनी बढ़ोतरी हुई है।

कुसुम – सरकार आम जनता को मूर्ख समझती है। पेट्रोल के दाम घटाकर रोजमर्रा की चीज़ों के दाम बढ़ा दिए।

पूनम – बेचारे गरीब बच्चों का क्या होगा। जो थोड़ा–बहुत दूध उन्हें नसीब होता था वह भी उन्हें अब मिलने से रहा।

कुसुम – जब भी महँगाई बढ़ती है ज्यादा असर निम्नवर्ग व मध्यमवर्ग पर पड़ता है। अमीर लोगों पर इसका असर नहीं होता जितना गरीबों पर होता है।

पूनम – नहीं, ऐसी बात नहीं है। असर उन पर भी होता है। पर आय अधिक होने से उन पर महँगाई की मार का असर उतना नहीं होता जितना गरीबों पर होता है।

कुसुम – ऑटोवाले पहले भी मनमानी करते थे, अब भी करेंगे। लेकिन सरकार को रोजमर्रा की चीज़ों के दाम ज्यादा नहीं बढ़ाने चाहिए।

पूनम – हाँ, मैं तुम्हारी बात से बिल्कुल सहमत हूँ। इधर सरकार गरीबी हटाओ के नारे लगाती है उधर महँगाई बढ़ाती है, ऐसे में आम जनता करे भी तो क्या?

कुसुम – हालत यही रही तो आम आदमी का दिल्ली में रहना ही मुश्किल हो जाएगा।

पूनम – हाँ, बिल्कुल सही कह रही हो। अच्छा, मैं चलती हूँ। बच्चों की बस का समय हो गया।

कुसुम – ठीक है।

अभ्यास

1 एन.सी.सी. कैंप में जाने के लिए की जा रही तैयारियों के बारे में दो मित्रों के बीच संवाद लिखिए।

2 चोरी की घटनाओं को लेकर दो पड़ोसियों की बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

3 बेरोजगारी पर दो मित्रों में संवाद लिखिए।

4 यात्रा के दौरान दो यात्रियों के बीच आतंकवाद की समस्या पर हो रहे बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

5 स्कूल में प्रवेश की समस्या के संबंध में अभिभावकों की बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

6 डॉक्टर और रोगी के मध्य बातचीत पर संवाद लिखिए।

7 अपने पुत्र को सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल में प्रवेश दिलाने के लिए पति–पत्नी की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

8 देश में बढ़ रही आतंकवादी घटनाओं पर दो पड़ोसियों की बातचीत संवाद के रूप में लिखिए।

9 अपने लक्ष्य को लेकर दो मित्रों की बातचीत संवाद के रूप में लिखिए।

10 आधुनिक शैली के वस्त्रों के संबंध में दो महिलाओं की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

11 परीक्षा भवन के बाहर दो छात्रों की बातचीत लिखिए।

12 किसान और मंडी के व्यापारी की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

13 यात्री और बस-परिचालक के बीच संवाद लिखिए।

14 बस में किसी अपरिचित से मित्रता करते हुए यात्रियों के बीच संवाद लिखिए।

15 बैंक में नया खाता खुलवाने को लेकर ग्राहक और बैंक मैनेजर की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

16 अपने भाई के जन्मदिवस पर मित्र को आमंत्रित करते हुए दूरभाष पर होने वाला संवाद लिखिए।

17 मित्रों के साथ शिमला पिकनिक जाने हेतु मोहिता और उसकी माता जी के बीच संवाद लिखिए।

18 किसी प्राइवेट बैंक में नौकरी हेतु साक्षात्कार (इंटरव्यू) देने आए दो उम्मीदवारों के बीच की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

19 प्रदूषण की समस्या पर चिंता प्रकट करते हुए आकाश और आदित्य के बीच की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

20 'इंटरनेट बना दिमागी बुखार' विषय पर शिक्षक और छात्रों के बीच संवाद लिखिए।

21 'रटंत विद्या को न अपनाएँ' विषय पर माँ और बेटी के बीच संवाद लिखिए।

22 'व्यायाम और खेल' विषय पर पिता और पुत्र के बीच संवाद लिखिए।

23 'भारतीय पर्व' विषय पर शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवाद लिखिए।

24 'फैशन का बढ़ता प्रभाव' विषय पर माँ और बेटी के बीच संवाद लिखिए।

25 'पुस्तक मेला' विषय पर अंकित और नितिन के बीच संवाद लिखिए।

विज्ञापन-लेखन

महत्त्वपूर्ण दिशा-निर्देश

आज का युग विज्ञापन का युग है। दूरदर्शन के कार्यक्रम हों, पत्र-पत्रिकाएँ हों या शहर की ऊँची दीवारें हो-सब तरफ विज्ञापन नज़र आते हैं।

विज्ञापन का उद्‌देश्य ही प्रचार-प्रसार द्‌वारा प्रचारकर्ता और आम जनता के बीच संपर्क स्थापित करना है। बड़ी-बड़ी कपंनियाँ एवं उत्पादक अपने उत्पादनों को प्रचारित करने के लिए भाँति-भाँति के विज्ञापनों का सहारा लेते हैं। इस प्रकार विज्ञापन उत्पादक और उपभोक्ता के बीच सेतु का कार्य करते हैं। विज्ञापनों को देखकर ही हमें नई-नई वस्तुओं के बारे में जानकारी मिलती है। वस्तुओं का चुनाव करने में मदद मिलती है। विज्ञापन हमारे मन को निश्चित रूप से प्रभावित करते है।

विज्ञापन बनाते समय कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है -

- विज्ञापन के लिए बनाया गया चित्र रंगीन, स्पष्ट एवं आकर्षक होना चाहिए।
- वस्तु की गुणवत्ता की सही जानकारी देनी चाहिए। बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताना चाहिए।
- लुभावने दृश्यों द्‌वारा गुमराह नहीं करना चाहिए।
- प्रस्तुतीकरण इतना आकर्षक होना चाहिए कि ग्राहक प्रेरित हो जाए और वस्तु को खरीद ले।

अभ्यास

1 'तेज़ पेंसिल' - नामक पेंसिल के लिए 30-35 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन लिखिए।

2 'राजधानी नमक' - नामक नमक के लिए 30-35 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन लिखिए।

3 'निशात नारियल तेल के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

4 'शाइन टूथपेस्ट' के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

5 'ग्लोरी डिटर्जेंट' नामक डिटर्जें के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

6 'मॉडर्न आइसक्रीम' नामक आइसक्रीम के लिए 20-25 शब्दों में एक आकर्षक

विज्ञापन तैयार कीजिए।

7 'माधव मक्खन' नामक मक्खन के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

8 टूटते बालों को रोकने वाले किसी तेल के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

9 खिलौनों के विक्रेता हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।

10 चॉकलेट के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

11 मोबाइल के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

12 साड़ियों की सेल लगी है, इसके लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

13 वाद्ययंत्र विक्रेता हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।

14 आप एक नया मोबाइल शोरूम खोलने जा रहे हैं, उसके लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

15 इलेक्ट्रॉनिक्स विक्रेता हेतु आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

चित्र-वर्णन

चित्र-वर्णन एक ऐसी कला है जिसमें मन के भाव प्रकट होते हैं। चित्र को देखकर आपके मन में जो भाव उठते हैं, उन्हें आप लिखकर प्रकट करते हैं। यही चित्र-वर्णन कहलाता है। जो विद्यार्थी जितना अधिक कुशाग्रबुद्धि, भावुक, कल्पनाशील और चतुर होगा वह उतनी ही कुशलता से चित्रों का अध्ययन कर सकेगा।

चित्र-वर्णन में ध्यान रखने योग्य बातें

१. चित्र को देखकर सबसे पहले उसका शीर्षक तय करना चाहिए।
२. चित्र को सूक्ष्मता से देखें, दिखाई देने वाले लोगों के चेहरे के भावों तथा क्रियाओं का चित्र के साथ संबंध समझने का प्रयास करें।
३. विवेचना करते समय अत्यंत सजग एवं जागरूक रहने की आवश्यकता होती है।
४. चित्र-वर्णन के लिए निर्धारित शब्दों को ध्यान में रखकर ही वर्णन करना चाहिए।
५. प्रथम वाक्य ऐसा होना चाहिए कि पाठक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हो जाए।
६. प्रथम एवं अंतिम वाक्य प्रभावोत्पादक होना चाहिए।

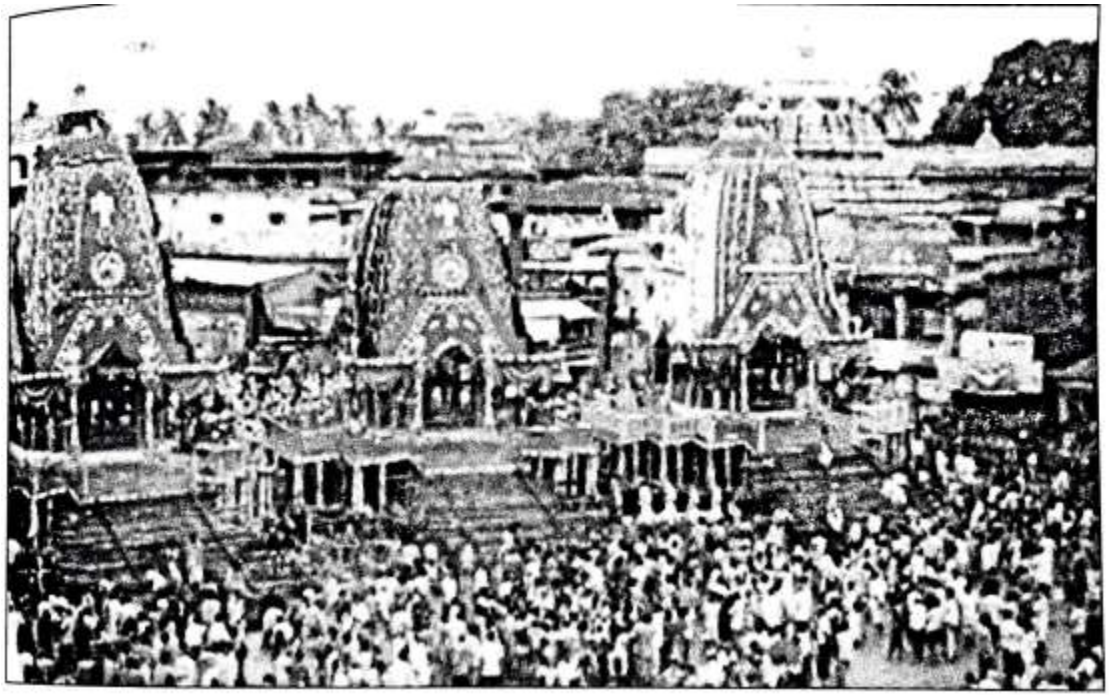

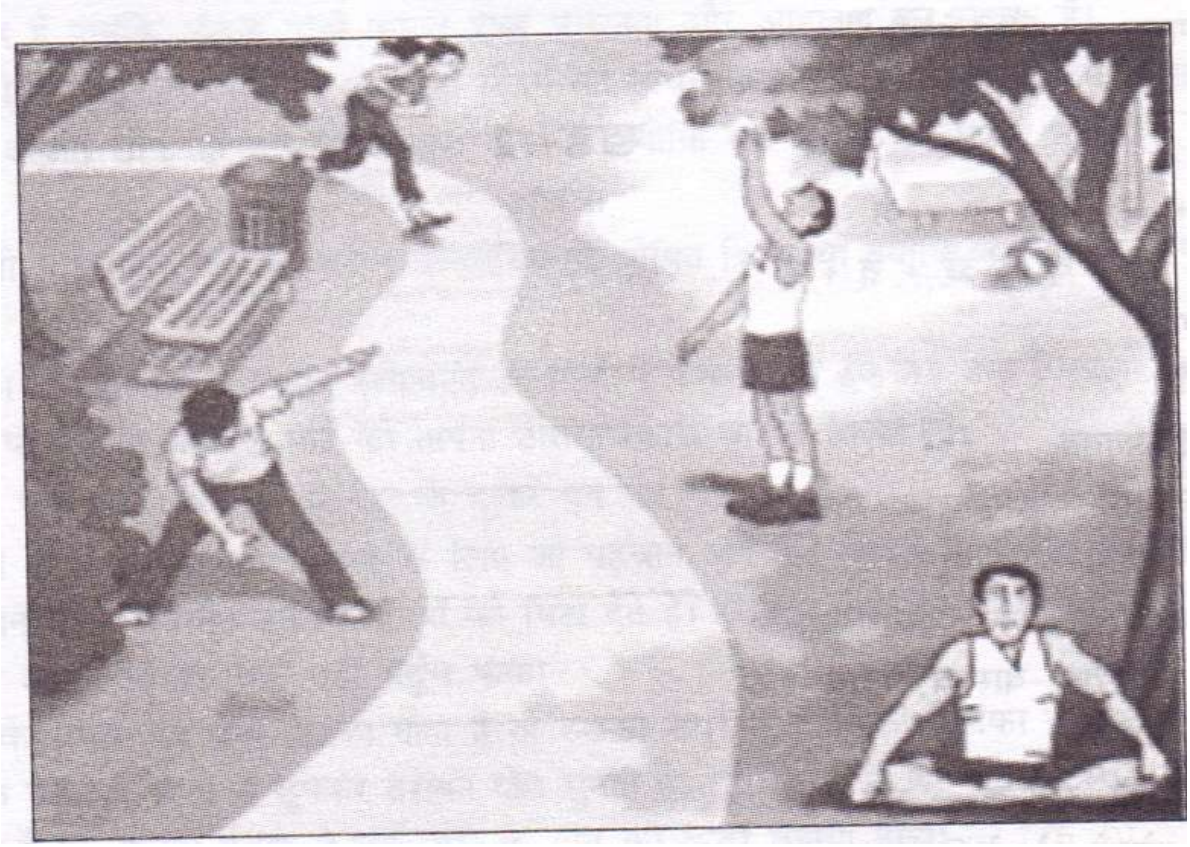

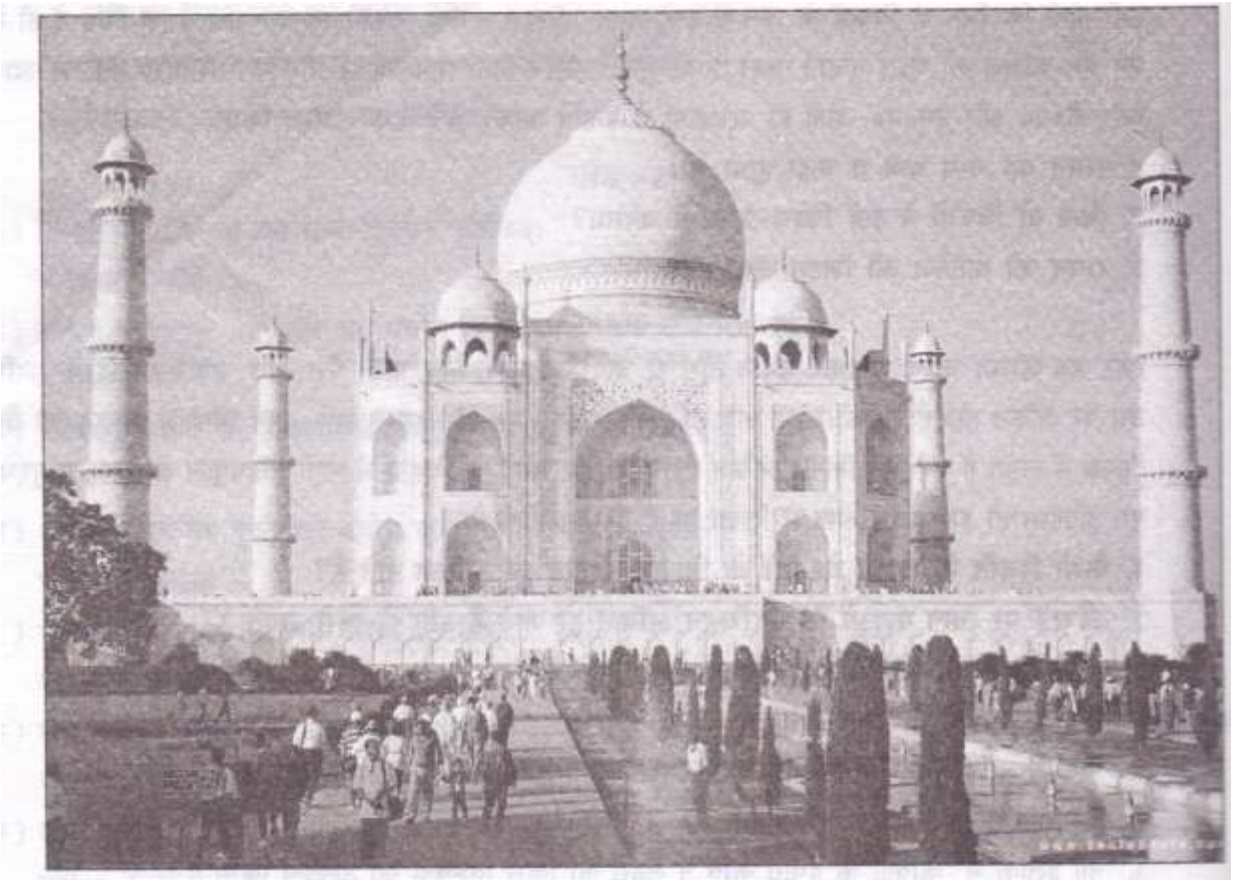

शैक्षिक सत्र 2016-17
वार्षिक परीक्षा
विषय – हिंदी

कक्षा – नवीं

सेट – 1

समयःतीन घंटे **अधिकतम अंकः 90**

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्नपत्र में मुद्रित पृष्ठ 7 हैं।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्नपत्र में 18 प्रश्न हैं।
- इस प्रश्न पत्र में चार खंड हैं। चारो खंडों के उत्तर देना अनिवार्य है।

निर्देशः १. भाषा की शुद्धता, स्वच्छता एवं मानकता पर विशेष ध्यान दीजिए।
2. सभी प्रश्नों व उनके उपभागों को क्रमशः लिखिए।

खंड 'क'

प्रश्न.१. निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिएः–

देना ही देवता की वास्तविक विशेषता है। असहाय व्यक्ति का शोषण करने वाला किसी को केवल दुःख दे सकता है। देने का काम वही कर सकता है जो स्वयं भी परिपूर्ण होता है। देवता स्वयं को भी देता है और दूसरों को भी। जिसने स्वयं को न दिया वह दूसरों को क्या देगा। हम लोग अक्सर कहते हैं– कंजूस किसी को कुछ नहीं देता। यह बात ठीक है कि कंजूस दूसरे को नहीं देता, पर कंजूस स्वयं को भी कहाँ देता है। वह दीन–हीन की तरह रहता है और उसी तरह मर भी जाता है। देने से किसी व्यक्ति की संपन्नता सार्थक होती है। धन की तीन गतियाँ होती हैं– उपभोग, दान और नाश। जिसने

धन का उपभोग नहीं किया, दान नहीं किया, उसके धन के लिए एक ही गति बचती है –नाश। घूस और अनैतिक ढंग से हड़पकर दूसरों के धन से घर भरने वालों का यही अंत होता है। सत्ता, व्यापार, राजनीति में इस प्रकार के सफेदपोश लुटेरे छुपे हुए हैं।

जो हम कमाते हैं, वह हमारी आजीविका है और जो हम देते हैं, वह हमारा जीवन है। धन हमारे जीवन का केंद्र नहीं है। धन एक साधन है, जिससे हम अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हैं। धन एक सहायता–सामग्री है, जिससे हम जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। धन का काम है कि वह हमें सुख दे। यह सुख हमें तीन क्रियाओं से मिलता है– धन कमाने से, धन के उपभोग से और धन के दान से। इन तीनों क्रियाओं से धन आपकी सेवा करता है। बाकी क्रियाओं से हम धन की सेवा करते हैं। कंजूस धन को बचा लेते हैं, अपव्ययी उसे उड़ा देते हैं, लाला उसे उधार देते हैं, चोर उसे चुरा लेते हैं, धनी उसे बढ़ा देते हैं, जुआरी उसे गवाँ देते हैं और मरने वाले उसे पीछे छोड़ जाते हैं।

क. देने का काम कौन कर सकता है? १

ख. आजीविका और जीवन में क्या अंतर है? १

ग. हमें धन की किन क्रियाओं से सुख मिलता है? १

घ. हम अपनी जिम्मेदारियों और उद्देश्यों की पूर्ति कैसे करते है ? १

ड. 'आजीविका' शब्द में से उपसर्ग और प्रत्यय छाँटकर लिखिए। १

प्रश्न.2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिएः–

वास्तव में मनुष्य स्वयं को देख नहीं पाता। उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को देखते हैं, उसका हृदय दूसरों के दोषों को अनुभव करता है। उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण कर सकती है, किंतु उसका अपना चरित्र, उसके अपने दोष, अवगुण, झूठा अभिमान और आत्म–गौरव के काले पर्दे में इस प्रकार छिपे रहते हैं कि जीवन के

अंत तक उसे दिखाई नहीं देते। इसीलिए मनुष्य स्वयं को सर्वगुण-संपन्न देवता समझ बैठता है। व्यक्ति स्वयं के द्वारा जितना छला जाता है, उतना किसी के द्वारा नहीं। आत्मविश्लेषण करना कोई सहज कार्य नहीं। इसके लिए उदारता, सहनशीलता एवं महानता की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ यह नहीं कि आत्मविश्लेषण मनुष्य कर ही नहीं सकता। अपने गुणों-अवगुणों की अनुभूति मनुष्य को सदैव रहती है। अपने दोषों से वह हर पल अवगत रहता है, किंतु अपने दोषों को मानने के लिए तैयार न रहना ही उसकी दुर्बलता होती है और उसे आत्मविश्लेषण की क्षमता नहीं दे पाती। उसमें इतनी उदारता और हृदय की विशालता ही नहीं होती कि वह अपने दोषों को स्वयं देखकर अनुभव कर सके। इसके विपरीत पर-निंदा एवं पर-दोष-दर्शन में कुछ नहीं बिगड़ता, उल्टे मनुष्य आनंद का अनुभव करता है, परंतु आत्मविश्लेषण करके अपने दोष देखने से मनुष्य के अहंकार को चोट पहुँचती है।

(i) मनुष्य स्वयं को देख पाने में असमर्थ क्यों है? १

क. दूसरों के चरित्र को देखता है।

ख. उसका हृदय दूसरों के दोषों को अनुभव करता है।

ग. उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण करती है।

घ. ऊपर लिखे सभी कथन सच हैं।

(ii) आत्मविश्लेषण के लिए क्या आवश्यक है? १

क. उदारता, सहनशीलता एवं महानता की आवश्यकता होती है।

ख. किसी की नहीं सुनना चाहिए।

ग. सबको देखना चाहिए।

घ. शालीनता होनी चाहिए।

(iii) पर-निंदा में मानव आनंद क्यों लेता है? १

क. दूसरों का मजाक उड़ाने में मज़ा नहीं आता है।

ख. दूसरे हम पर हंसते हैं।

ग. हम बेवकूफ होते हैं।

घ. पर-निंदा एवं पर-दोष-दर्शन में कुछ नहीं बिगड़ता।

(iv) मनुष्य के अहंकार को चोट कब पहुँचती है? १

क. अपनी तारीफ करने पर।

ख. अपने दोष देखने पर।

ग. कक्षा में प्रथम आने पर।

घ. झूठ बोलने पर।

(V) इस गद्यांश का उचित शीर्षक होना चाहिएः- १

क. मनुष्य

ख. खेलकूद

ग. आत्मविश्लेषण

घ. देवता

प्रश्न-3. मुक्त पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिएः-

क. समावेशी शिक्षा का क्या अर्थ है? हमारे देश में समावेशी शिक्षा को कैसे संभव बनाया जा सकता है? 5

ख. अधिगम अशक्तता (लर्निंग डिसेबिलिटी) क्या है? इस समस्या के समाधान के लिए अपने सुझाव दीजिए। 5

'खंड-ख'

प्रश्न-4.क किन्हीं दो शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिएः- 2

मातुश्री, साप्ताहिक, वृक्ष।

ख. निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार लगाकर मानक रूप लिखिएः– १

सम्बन्ध, हिन्दी।

ग. निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुनासिक लगाइएः– १

चादनी, गवार।

घ. निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर नुक्ता लगाइएः– १

फिजिक्स, मजाक।

प्रश्न–5 क निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों और प्रत्ययों को अलग–अलग कीजिएः– १

घूसखोर, बनावट।

ख. निम्नलिखित उपसर्गों से एक–एक शब्द बनाइएः– 2

अन, बे।

प्रश्न–6 क किन्हीं दो का संधि–विच्छेद कीजिएः– 2

देवालय, सदाचार, वार्षिकोत्सव।

ख. किन्हीं दो की संधि कीजिएः– 2

जगत+ईश, परम्+औज, रमा+ईश

प्रश्न–7 निम्नलिखित वाक्यों में उचित स्थानों पर सही विराम चिह्न लगाइएः– 3

क. आह कितना दर्द है

ख. विद्यार्थियों अपनी अपनी पुस्तक निकालो

ग. गांधीजी ने कहा अंग्रेजों भारत छोड़ो

'खंड–ग'

प्रश्न–8. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिए:–

हम आकाश का वर्णन करते हैं, पृथ्वी का वर्णन करते हैं, जलाशयों का वर्णन करते हैं। पर कीचड़ का वर्णन कभी किसी ने नहीं किया है। कीचड़ में पैर डालना कोई पसंद नहीं करता, कीचड़ से शरीर गंदा होता है, कपड़े मैले हो जाते हैं। अपने शरीर पर कीचड़ उड़े यह किसी को अच्छा नहीं लगता और इसीलिए कीचड़ के लिए किसी को सहानुभूति नहीं होती। यह सब यथार्थ है। किंतु तटस्थता से सोंचे तो हम देखेंगे कि कीचड़ में कुछ कम सौंदर्य नहीं है। पहले तो यह कि कीचड़ का रंग बहुत सुंदर है। पुस्तकों के गत्तों पर, घरों की दीवालों पर अथवा शरीर पर के कीमती कपड़ों के लिए हम सब कीचड़ के जैसे रंग पसंद करते हैं।

क. हम किस–किस का वर्णन करते हैं? 1

ख. कीचड़ का वर्णन किसी ने क्यों नहीं किया है? 1

ग. तटस्थता से सोंचे तो हमें क्या पता चलता है? 1

घ. हम कहाँ–कहाँ कीचड़ जैसे रंग पसंद करते हैं? 2

अथवा

धर्म की उपासना के मार्ग में कोई रुकावट न हो। जिसका मन जिस प्रकार चाहे, उसी प्रकार धर्म की भावना को अपने मन में जगावे। धर्म और ईमान, मन का सौदा हो, ईश्वर और आत्मा के बीच का संबंध हो, आत्मा को शुद्ध करने और ऊँचे उठाने का साधन हो। वह, किसी दशा में भी, किसी दूसरे व्यक्ति की स्वाधीनता को छीनने या

कुचलने का साधन न बने। आपका मन चाहे, उस तरह का धर्म आप मानें, और दूसरों का मन चाहे, उस प्रकार का धर्म वह माने। दो भिन्न धर्मों के मानने वालों के टकरा जाने के लिए कोई स्थान न हो।

क. धर्म के बारे में क्या विचार होना चाहिए? 1

ख. धर्म किसका साधन होना चाहिए? 2

ग. धर्म किसका साधन न बने? 1

घ. धर्म में किस बात का स्थान नहीं होना चाहिए? 1

प्रश्न–9. देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन प्रदान करने में सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् के महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

महादेव भाई के लिखे नोट कैसे होते थे और उनके विषय में गांधी जी क्या कहते थे?

प्रश्न–10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. 'धर्म की आड़' पाठ के अनुसार ईश्वर किनको अधिक प्यार करेगा? 2

ख. मनुष्य को क्या भान होता जिससे वह कीचड़ का तिरस्कार न करता? 2

ग. रामन की दिली इच्छा क्या थी? 1

प्रश्न–11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

क. 'गीत–अगीत' कविता में प्रेमी के गीत गाने पर प्रेमिका क्या सोचती है है? 2

ख. 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से कवि क्या कहना चाहता है? 2

ग. सुखिया का पिता उसे बाहर खेलने क्यों नहीं जाने देना चाहता था? 1

प्रश्न–12. 'अग्निपथ' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है? 5

अथवा

'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में समाज के किस वर्ग के बारे में बताया गया है? इस कविता को लिखने का उद्देश्य क्या है?

प्रश्न–13. 'मेरा छोटा–सा निजी पुस्तकालय' पाठ को पढ़कर आपको क्या प्रेरणा मिलती है? लेखक की जगह आप होते तो क्या करते? 5

अथवा

'दिए जल उठे' पाठ में महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था? इस दृश्य से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

'खंड–घ'

प्रश्न–14. 26 जनवरी की परेड देखने के बाद दो मित्रों के बीच हुए संवाद को लिखिए। 5

प्रश्न–15. आपके मामाजी ने आपके जन्मदिन पर उपहार भेजा है। उसके लिए धन्यवाद प्रकट करते हुए पत्र लिखिए। 5

अथवा

आप छुट्टियों में कहीं घूमने गए थे। वहाँ का विवरण अपने मित्र को पत्र में लिखिए।

प्रश्न–16. किसी नामी कंपनी के दंत मंजन या टूथब्रश का एक विज्ञापन बनाइए। 5

प्रश्न–17. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 80–100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिएः–** 5

<u>समाचार पत्रों की दुनिया</u>– ज्ञान का भंडार, समाचार पत्र के लाभ,

तात्कालिक घटनाओं से जुड़ाव।

<u>राष्ट्र भाषा हिंदी</u>– संविधान में स्थान, हिंदी जानने के लाभ, संपर्क भाषा बनाने के लिए सुझाव।

प्रश्न–18. नीचे दिए गए चित्र का वर्णन लगभग चालीस शब्दों में कीजिए। 5

शैक्षिक सत्र 2016-17
वार्षिक – परीक्षा
विषय – हिंदी
कक्षा – नवीं
सेट –2

समयःतीन घंटे **अधिकतम अंकः 90**

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्नपत्र में मुद्रित पृष्ठ 7 हैं।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्नपत्र में 18 प्रश्न हैं।
- इस प्रश्न पत्र में चार खंड हैं। चारो खंडों के उत्तर देना अनिवार्य है।

निर्देशः १. भाषा की शुद्धता, स्वच्छता एवं मानकता पर विशेष ध्यान दीजिए।
2. सभी प्रश्नों व उनके उपभागों को क्रमशः लिखिए।

खंड 'क'

प्रश्न–१. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिएः–

क. वास्तव में मनुष्य स्वयं को देख नहीं पाता। उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को देखते हैं, उसका हृदय दूसरों के दोषों को अनुभव करता है। उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण कर सकती है, किंतु उसका अपना चरित्र, उसके अपने दोष एवम् उसके अवगुण, झूठा अभिमान और आत्म–गौरव के काले आवरण में इस प्रकार छिपे रहते हैं कि जीवन के अंत तक उसे दृष्टिगोचर ही नहीं हो पाते। इसीलिए मनुष्य स्वयं को सर्वगुण–संपन्न देवता समझ बैठता है। व्यक्ति स्वयं के द्वारा जितना छला जाता है, उतना किसी के द्वारा नहीं। आत्मविश्लेषण करना कोई सहज कार्य नहीं। इसके लिए उदारता, सहनशीलता एवं महानता की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ यह नहीं कि आत्मविश्लेषण मनुष्य कर ही नहीं सकता। अपने गुणों–अवगुणों की अनुभूति मनुष्य को सदैव रहती है। अपने दोषों से वह हर पल अवगत रहता है, किंतु अपने दोषों को मानने के लिए तैयार न रहना ही उसकी दुर्बलता होती है और उसे आत्मविश्लेषण

की क्षमता नहीं दे पाती। उसमें इतनी उदारता और हृदय की विशालता ही नहीं होती कि वह अपने दोषों को स्वयं देखकर अनुभव कर सके। इसके विपरीत पर-निंदा एवं पर-दोष-दर्शन में कुछ नहीं बिगड़ता, उल्टे मनुष्य आनंद का अनुभव करता है, परंतु आत्मविश्लेषण करके अपने दोष देखने से मनुष्य के अहंकार को चोट पहुँचती है।

(i) मनुष्य स्वयं को देख पाने में असमर्थ क्यों है? १

क. दूसरों के चरित्र को देखता है।

ख. उसका हृदय दूसरों के दोषों को अनुभव करता है।

ग. उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण करती है।

घ. ऊपर लिखे सभी कथन सच हैं।

(ii) आत्मविश्लेषण के लिए क्या आवश्यक है? १

क. उदारता, सहनशीलता एवं महानता की आवश्यकता होती है।

ख. किसी की नहीं सुनना चाहिए।

ग. सबको देखना चाहिए।

घ. शालीनता होनी चाहिए।

(iii) पर-निंदा में मानव आनंद क्यों लेता है? १

क. दूसरों का मजाक उड़ाने में मज़ा नहीं आता है।

ख. दूसरे हम पर हंसते हैं।

ग. हम बेवकूफ होते हैं।

घ. पर-निंदा एवं पर-दोष-दर्शन में कुछ नहीं बिगड़ता।

(iv) मनुष्य के अहंकार को चोट कब पहुँचती है? १

क. अपनी तारीफ करने पर।

ख. अपने दोष देखने पर।

ग. कक्षा में प्रथम आने पर।

घ. झूठ बोलने पर।

(V) इस गद्यांश का उचित शीर्षक होना चाहिएः- १

क. खेलकूद

ख. देवता

ग. आत्मविश्लेषण

घ. मनुष्य

प्रश्न-2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिएः-

देना ही देवता की वास्तविक विशेषता है। असहाय व्यक्ति का शोषण करने वाला किसी को केवल दुःख दे सकता है। देने का काम वही कर सकता है जो स्वयं भी परिपूर्ण होता है। देवता स्वयं को भी देता है और दूसरों को भी। जिसने स्वयं को न दिया वह दूसरों को क्या देगा। हम लोग अक्सर कहते हैं- कंजूस किसी को कुछ नहीं देता। यह बात ठीक है कि कंजूस दूसरे को नहीं देता, पर कंजूस स्वयं को भी कहाँ देता है। वह दीन-हीन की तरह रहता है और उसी तरह मर भी जाता है। देने से किसी व्यक्ति की संपन्नता सार्थक होती है। धन की तीन गतियाँ होती हैं- उपभोग, दान और नाश। जिसने धन का उपभोग नहीं किया, दान नहीं किया, उसके धन के लिए एक ही गति बचती है -नाश। घूस और अनैतिक ढंग से हड़पकर दूसरों के धन से घर भरने वालों का यही अंत होता है। सत्ता, व्यापार, राजनीति में इस प्रकार के सफेदपोश लुटेरे छुपे हुए हैं।

जो हम कमाते हैं, वह हमारी आजीविका है और जो हम देते हैं, वह हमारा जीवन है। धन हमारे जीवन का केंद्र नहीं है। धन एक साधन है, जिससे हम अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हैं। धन एक सहायता-सामग्री है, जिससे हम जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। धन का काम है कि वह हमें सुख दे। यह सुख हमें तीन क्रियाओं से

मिलता है– धन कमाने से, धन के उपभोग से और धन के दान से। इन तीनों क्रियाओं से धन आपकी सेवा करता है। बाकी क्रियाओं से हम धन की सेवा करते हैं। कंजूस धन को बचा लेते हैं, अपव्ययी उसे उड़ा देते हैं, लाला उसे उधार देते हैं, चोर उसे चुरा लेते हैं, धनी उसे बढ़ा देते हैं, जुआरी उसे गवाँ देते हैं और मरने वाले उसे पीछे छोड़ जाते हैं।

क. देने का काम कौन कर सकता है? १

ख. आजीविका और जीवन में क्या अंतर है? १

ग. हमें धन की किन क्रियाओं से सुख मिलता है? १

घ. हम अपनी जिम्मेदारियों और उद्देश्यों की पूर्ति कैसे करते है ? १

ड. 'आजीविका' में उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय छाँटकर लिखिए। १

प्रश्न–3. मुक्त पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिएः–

क. रानी चेन्नमा ने अंग्रेजों के किस नियम का विरोंध किया तथा उनका स्वाधीनता आंदोलन में क्या योगदान था? 5

ख. भगिनी निवेदिता तथा कस्तूरबा गाँधी स्वाधीनता आंदोलन में किस प्रकार सक्रिय रहीं? 5

'खंड–ख'

प्रश्न–4.क किन्हीं दो शब्दों का वर्ण–विच्छेद कीजिएः– 2

विज्ञान, रक्षा, आशीर्वाद

ख. निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार लगाकर मानक रूप लिखिएः– १

दडं, सकेंत।

ग. निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुनासिक लगाइएः– १

गावँ, कापँता

घ. निम्नलिखित शब्दों मे उचित स्थान पर नुक्ता लगाइएः- १

काफी, तेज

प्रश्न–5 क निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्दों और प्रत्ययों को अलग–अलग कीजिएः- १

पतंगबाज़, मानवता

ख. निम्नलिखित उपसर्गों से एक–एक शब्द बनाइएः- 2

उप, बा।

प्रश्न–6 क किन्हीं दो का संधि–विच्छेद कीजिएः- 2

रामावतार, शब्दार्थ, निराशा

ख. किन्हीं दो की संधि कीजिएः- 2

तथा+एव, दिक्+अंबर, रत्न+आकर

प्रश्न–7 निम्नलिखित वाक्यों में उचित स्थानों पर सही विराम चिह्न लगाइएः- 3

क. वाह तुमने तो कमाल कर दिया

ख. मानव को सुख कैसे मिलेगा

ग. माँ ने धोबी को साड़ी कुर्ता रुमाल और शर्ट दी

‘खंड–ग’

प्रश्न–8. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–

धर्म की उपासना के मार्ग में कोई रुकावट न हो। जिसका मन जिस प्रकार चाहे, उसी प्रकार धर्म की भावना को अपने मन में जगावे। धर्म और ईमान, मन का सौदा हो, ईश्वर और आत्मा के बीच का संबंध हो, आत्मा को शुद्ध करने और ऊँचे उठाने का साधन हो। वह, किसी दशा में भी, किसी दूसरे व्यक्ति की स्वाधीनता को छीनने या कुचलने का साधन न बने। आपका मन चाहे, उस तरह का धर्म आप मानें, और दूसरों का मन चाहे, उस प्रकार का धर्म वह माने। दो भिन्न धर्मों के मानने वालों के टकरा जाने के लिए कोई स्थान न हो।

क. धर्म के बारे में क्या विचार होना चाहिए? 1

ख. धर्म किसका साधन होना चाहिए? 2

ग. धर्म किसका साधन न बने? 1

घ. धर्म में किस बात का स्थान नहीं होना चाहिए? 1

अथवा

हम आकाश का वर्णन करते हैं, पृथ्वी का वर्णन करते हैं, जलाशयों का वर्णन करते हैं। पर कीचड़ का वर्णन कभी किसी ने नहीं किया है। कीचड़ में पैर डालना कोई पसंद नहीं करता, कीचड़ से शरीर गंदा होता है, कपड़े मैले हो जाते हैं। अपने शरीर पर कीचड़ उड़े यह किसी को अच्छा नहीं लगता और इसीलिए कीचड़ के लिए किसी को सहानुभूति नहीं होती। यह सब यथार्थ है। किंतु तटस्थता से सोंचे तो हम देखेंगे कि कीचड़ में कुछ कम सौंदर्य नहीं है। पहले तो यह कि कीचड़ का रंग बहुत सुंदर है। पुस्तकों के गत्तों पर, घरों की दीवालों पर अथवा शरीर पर के कीमती कपड़ों के लिए हम सब कीचड़ के जैसे रंग पसंद करते हैं।

क. हम किस–किस का वर्णन करते हैं? 1

ख. कीचड़ का वर्णन किसी ने क्यों नहीं किया है? 1

ग. तटस्थता से सोंचे तो हम क्या देखेंगे? 1

घ. हम कहाँ-कहाँ कीचड़ जैसे रंग पसंद करते हैं? 2

प्रश्न-9. महादेव भाई के लिखे नोट कैसे होते थे और उनके विषय में गांधी जी क्या कहते थे? 5

अथवा

देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन प्रदान करने में सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् के महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न-10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः-

क. 'धर्म की आड़' पाठ के अनुसार सबकी भलाई के लिए अपने आचरण को सुधारना क्यों ज़रूरी है? 2

ख. कीचड़ सूखकर किस प्रकार का दृश्य उपस्थित करता है? 2

ग. रामन भावुक प्रकृति प्रेमी के अलावा और क्या थे? 1

प्रश्न-11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः-

क. 'गीत-अगीत' कविता में गुलाब के मन में क्या दुख था? 2

ख. 'नए इलाके में' कवि अक्सर रास्ता क्यों भूल जाता है? 2

ग. सुखिया के पिता को क्या सज़ा मिली? 1

प्रश्न-12. 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता में समाज के किस वर्ग के बारे में बताया गया है? इस कविता को लिखने का उद्देश्य क्या है? 5

अथवा

'अग्निपथ' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है?

प्रश्न-13. 'दिए जल उठे' पाठ में महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था? इस दृश्य से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? 5

अथवा

लेखक के अनुसार हामिद खाँ के किस प्रकार के विचार आततायियों

के विरोध में जाकर हिंदू–मुसलिम सद्भावना का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं? स्पष्ट कीजिए।

'खंड–घ'

प्रश्न–14. स्वच्छ–भारत अभियान के बारे में दो मित्रों के बीच हुए संवाद को लिखिए। 5

प्रश्न–15. खेल प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ एथलीट का पुरस्कार प्राप्त होने पर अपने मित्र को बधाई पत्र लिखिए। 5

अथवा

छात्रावास में रहने वाले छोटे भाई को सोच–समझकर मित्रों को चुनने की सलाह देते हुए पत्र लिखिए।

प्रश्न–16. किसी विदेशी कंपनी की घड़ियों **अथवा** जूतों का एक विज्ञापन बनाइए। 5

प्रश्न–17. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 80–100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिएः– 5

योगः निरोग रहने का साधन – समाज में बढ़ता तनाव और प्रदूषण, औषधि से अधिक सशक्त शरीर की आवश्यकता, योग के लाभ।

भारत की राजधानी – संपूर्ण भारत की प्रतिनिधि, प्रचीन और नवीन संस्कृति का संगम, शिक्षा में आगे, मनोरंजन का खज़ाना।

प्रश्न–18. नीचे दिए गए चित्र का वर्णन लगभग चालीस शब्दों में कीजिए। 5